❀ सीताराम ❀ सीताराम ❀ सीताराम ❀

❀ श्रीजानकी रमणो विजयतेतराम् ❀

रसिकाचार्यशिरोमणि श्रीमती रसमोदलता

विरचिता—

श्रीरसमोद माधुरी

सम्पादक—

शत्रुहन शरण

प्रकाशक—

श्रीरामप्रियाशरण 'पञ्जाबी'

निछावर श्रीसद्गुरु वचन अनुसरण

❀ सीताराम ❀ सीताराम ❀ सीताराम ❀

❀ श्रीमत्यै रसमोद लतायै नमः ❀

भूमिका

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते।
सङ्गात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते॥
क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृति भ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥

श्रीमद्भगवद्गीता २।६२,६३॥

अर्थात् विषयों का चिन्तन करने वाले पुरुष की, उन विषयों में आसक्ति हो जाती है। आसक्ति से काम उत्पन्न होता है और काम से क्रोध की उत्पत्ति होती है।

क्रोध से विवेकशून्यता होती है। अविवेक से स्मृति का भ्रंश और स्मृति भ्रंश से बुद्धि का नाश होता है तथा बुद्धि के नाश से वह आप नष्ट हो जाता है।

उपर्युक्त गीता वचन में सभी विकारों को क्रमशः उत्पन्न कर अन्त में सर्वनाश को पहुँचाने वाला काम विकार ही माना गया है।

वस्तुतः इस दुर्गन्धपूर्ण रोगशोकदायक, विषवत् काम

विकार की जितनी भी निन्दा की जाय, सब थोड़ी है। कल्याण कामी, भगवत्प्रेम के साधकों को येन केन प्रकारेण इसे जीतना ही चाहिये। इसके जीते बिना परमार्थ पथ में अग्रसर होना दुस्साध्य है।

किन्तु कामजयी होना टेढ़ी खीर है। बड़े बड़े जपी, तपी, योगी, यती, ज्ञानी, ध्यानी क्षण मात्र में काम से लुब्ध होते देखे सुने गये हैं। च्यवन ऋषि तथा योगिराज सौभरि इस बात के ज्वलन्त दृष्टान्त हैं।

आगे इस विकार पर विजय प्राप्त करने का सरल एवं अचूक प्रयोग बताया जाता है। बड़े बड़े असाध्य रोगों को समूल नाश करने वाली होमियोपैथी चिकित्सा पद्धति का मौलिक सिद्धान्त है "समः समे शमयति" अर्थात् कोई विशिष्ट लक्षण सम्पन्न रोग, उन्हीं लक्षणों वाली औषधि से नष्ट होता है। उपर्युक्त होमियो नीति के अनुसार दुर्गन्धपूर्ण, विषवत् सर्व-नाशकारी लौकिक काम विकार, वैसेही लक्षण सम्पन्न परन्तु अमृतमय दिव्य युगल विहार चिन्तन से ही नष्ट हो सकता है।

इसी से मधुर उपासना में श्रीजानकी रमण जू के दिव्य सेज विहार भावना की सर्वोत्कृष्ट उपादेयता बताई गई है।

"सब तजि ह्वै हौं महल उपासी।
... ...
सेज विलास रास रस गावौं, त्यागि वियोग उदासी।
... ..."

—रसिकाचार्य श्रीकृपानिवास स्वामी कृत सिद्धान्त पदावली

"युगल विहार अहार से, तृप्त होत नहिं जौन।
तिनके सुख बरनन लिये, सारद हूँ भइ मौन ॥
जिनके जुगल विहार बिनु, और न चित्त सुहाय।
ऐसे रसिक अनन्य के, सेवहु मन चित लाय ॥"

—श्रीप्रेमचन्द्रिका।

साहित्यिक समालोचकों ने कामक्रीड़ा के नग्न शब्द-चित्रण को अश्लील एवं ग्राम्यदोष से दूषित कहकर जो निन्दा की है, उसे केवल लौकिक घृणित काम विषय से ही सम्बन्धित समझना चाहिये। दिव्य युगलविहार का शाब्दिक चित्रण, एवं मानसिक चिन्तन तो अमृतमय, चिरंतन शाश्वत शान्ति, एवं अक्षय दिव्यधाम को प्रदान करने वाला है। दोनों में आकाश पाताल का अन्तर है। एक है विष, तो दूसरा अमृत; एक दुर्गन्धपूर्ण, दूसरा दिव्य सुगन्धमय; एक नरकप्रद, दूसरा सान्निध्य मुक्तिदायक; एक शोक परिणामी, दूसरा परमानन्ददायी।

सामान्य प्रारम्भिक भावना अभ्यासी रसपथ के पथिक का भी यह निर्भ्रान्त अनुभव है कि दिव्य विहार चिन्तवन से हाड़मांस, मलमूत्र से सने हुये स्थूल शरीरधारी स्त्री पुरुषों की वाह्य आकृति की ओर घृणा उत्पन्न हो जाती है। समस्त प्रकृति विलास से उपराम होकर, मन श्रीजानकीरमण से मिलने को विरहोत्कंठित हो उठता है।

शास्त्रीय दृष्टि से विचार करने पर भी युगल विहार दर्शनों से ही मायिक सर्वनाशकारी विषयों की आत्यन्तिक निवृत्ति सिद्ध होती है।

भगवान् गीताचार्य का कथन है कि—

"विषया विनिवर्त्तन्ते निराहारस्य देहिनः।
रस वर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्त्तते॥"
२।५६॥

अर्थात् संयमपूर्वक विषय सेवन से विवर्जित साधकों को विषय स्पृहा मिट जाती है, पर विषय का सूक्ष्म स्वरूप घृणित रस रूप में विद्यमान ही रहता है। परतत्त्व के दर्शनों से रस भी सूख जाता है।

यहाँ पर तत्त्व क्या है ? इस विषय में बहुत प्रमाणों में केवल विश्वम्भरोपनिषद् की एक श्रुतिमात्र उद्धृत की जाती है।

"परात्परस्य श्रीराम नाम्नः सर्वेषां नारायणादीनां नामानि भवन्ति, तस्य धाम्नस्तेषां धामान्युत्पद्यन्ते, तल्लीलातः सर्वेषां लीला प्रादुर्भवन्ति, तत्स्वरूपात्सर्वेषां रूपाण्याविर्भवन्ति।

स एवायोध्याधिपतिः सर्वकारणानामादि कारणम्। न तस्मात्किंचित्परं तत्त्वमस्तीति।

अर्थात् परात्परब्रह्म श्रीजानकी रमण के श्रीरामनाम से ही सभी भगन्नाम उत्पन्न हुये हैं। श्रीअयोध्याधाम से ही सभी भगवद्धाम प्रगट हुये हैं। श्रीसीताराम लीला से ही सभी भगवल्लीलाएँ प्रगट हुई हैं। श्रीसीताराम रूप से ही सभी भगवद्रूप उत्पन्न हुये हैं।

वही अयोध्याधिपति सभी कारणों के आदि कारण हैं। उनसे बढ़कर कोई अन्य तत्व नहीं है।

रमु क्रीड़ार्थक धातु से निष्पन्न श्रीरामपद वाच्य परात्पर-ब्रह्म को ही श्रुति 'रसोवैसः' कहकर रस रूप कहती है।

पुनः "श्रीराम एव सर्व्व कारणं तस्य रूप द्वयम्। परिच्छिन्न मपरिच्छिन्न च। परिच्छिन्न स्वरूपेण साकेत प्रमदावने तिष्ठन् रास मेव करोति।'

—श्रीविश्वम्भरोपनिषद्।

सर्व कारणों के आदि कारण श्रीजानकी रमण के दो रूप हैं। एक प्रगट, दूसरा परिच्छिन्न। परिच्छिन्न स्वरूप से वे श्रीअयोध्या प्रमदा वन में रास करते रहते हैं।

श्रीजानकी रमण जू का यही रासविहारी रूप निज रस स्वरूप है।

इस रस रूप के विषय में वृहदारण्यक की श्रुति कहती है-

स वै नैव रेमे। तस्मादेकाकी न रमते। सद्वितीय मैच्छत।······स इममेवात्मानं द्वेधापातयत्ततः पतिश्च पत्नी या भवताम्॥

अर्थात् अकेले में रमण क्रिया होगी नहीं, अकेले कोई कैसे रमण करे? अतः दो बनने की इच्छा से प्रेरित होकर वही रसमय ब्रह्म पति पत्नि युगल रूप होकर अनादिकाल से रमण कर रहे हैं। 'रसो ह्येवायं लब्ध्वाऽऽनन्दी भवति' इस श्रुति के अनुसार उस आनन्दहू के आनन्ददाता ब्रह्म को इस विहार रस में असीम आनन्द मिलता है। भावना सिद्ध रसिकों की मान्यता में इस विहार दर्शकों को भी वही सुख मिलता है।

अतः इन्हीं युगल स्वरूप दम्पति के सेज विहार को दृगभोगी सखी बनकर जाल झरोखे से अवलोकन करना-यही गीताचार्य के "परंद्रष्टा" का तात्पर्य है। अर्थात् युगलविहार दर्शनों से

ही दुःख शोक परिणामी मायिक कामादिक विषयों की आत्यन्तिक निवृत्ति संभव है, जैसे मिश्री पाकर छोए से स्वतः अरुचि हो जाती है।

अतः दिव्य युगलविहार को आत्मस्वरूप पोषक सुपथ्य आहार मान निशंक होकर, इसका मानसिक सेवन करना चाहिये।

प्रस्तुत प्रवन्ध श्रीरसमोद माधुरी के रचयिता हमारे पूज्यपाद गुरुदेव की महावाणी ऐसे ही युगलविहार सामग्रियों से भरपूर है। यह रहस्य विषय जगत सुख त्यागी, युगलकिशोर प्रेमपागी बड़भागी भावुक महानुभावों की प्राणाधिकप्रिय वस्तु हैं। इसे,

क्या जानैं जड़ जीव रहस गति सबसे न्यारी।
'युगल अनन्य' सनेह सजे विरले हियधारी॥
जुगल रहस रस सुधा सिंधु मधि मज्जहिं सज्जन।
पीवहिं सदा सनेम प्रेम नव रस मन रंजन॥
तिनहि छार सम जोग जग्य ब्रत दान त्याग तप।
लगत न संसय लेस करन लायक सुभ जस जप॥
उभय लोक की आस वास नीरस सपनौ सम।
समुझि मगन अनमोल रहस रस सागर बेगम॥

—श्रीस्वामी युगलानन्यशरण जी महाराज कृत श्री युगल विनोद विलास।

प्रस्तुत प्रवन्ध को श्रीगुरुदेव चरण ने किसी रहस्य ग्रंथ प्रणयन की दृष्टि से नहीं लिखा। यदि पुस्तकाकार इसका

निर्माण होता, तो यह प्रबन्ध प्रसङ्गानुकूल क्रमवद्ध शैली से सुसज्जित रहता। यह तो यत्र तत्र बिखरे पदों का संग्रह मात्र है। बहुत रचनाएँ तो पत्र रूप में बड़भागी कृपापात्रों के पास भेजी गईं, कुछ परचे पर लिखकर किसी गायक को दे दी गईं, कुछ किसी कॉपी में, कुछ अलग परचों पर लिखी मिली हैं।

इन पंक्तियों के लेखक द्वारा बहुत कुछ खोज ढूँढ़ करने पर जो कुछ सामग्री जुट सकी है, उन्हें लेकर सहृदय भावुक सज्जनों के समक्ष प्रकाश में लाई जा रही है। इस संग्रह में आये हुये पदों एवं छन्दों के अतिरिक्त और भी कृपापात्र गुरु-भाई बहनों के पास श्रीगुरुदेव कृत रचनाएँ हो सकती हैं। यदि वे श्रीरसमोदकुञ्ज तक उन्हें पहुँचाने की कृपा करें, तो भविष्य में उनके संग्रह को भी प्रकाश में लाने का प्रयास किया जायगा।

सम्प्रति श्रीगुरुदेव चरण हमारे चर्मचक्षु को प्रत्यक्ष दर्शन नहीं दे रहे हैं। आपका नित्य स्वरूप केवल ध्यानगम्य ही रह गया है। ऐसे अवसर पर "महामोह तमपुंज, जासु वचन रविकर निकर" ही हमारे साधन पथ के प्रकाशक रह गये हैं। अतः आपकी महावाणी गोपनीय होने के कारण, प्रकाशित नहीं करानी थी। परन्तु हम लोग श्रीसद्गुरु चरणानुजीवी कहाँ जायँ? श्रीसद्गुरुवचनामृत के अतिरिक्त हमारे लिये सहारा ही क्या रह गया है? वेद शास्त्रों में पारस्परिक विरोधी वचन मिलते हैं। हमारे पूज्य पूर्व रसिकाचार्यों की महावाणियों में भी मतैक्य नहीं है।

"नाना पंथ जगत में निज निज गुन गावै।
सबका सार बता कर गुरु मारग लावै ॥"

यदि गोप्य है तौ, महा रहस्यमय है तौ, हम श्रीगुरु-चरणाश्रितों के लिये महल प्राप्ति पथ का एक मात्र पाथेय तो यही श्रीसद्गुरु महावाणी है।

अतः गोप्य रहस्य को प्रकाशित कराने का हमारा दुस्साहस सहृदय सज्जनों के लिये क्षन्तव्य है।

इस प्रबन्ध के प्रकाशन में भी प्रिय गुरुभाई श्रीरामप्रिया शरण जी पंजाबी का आर्थिक सहयोग तथा भाई श्रीनृपनन्दन शरण जी का शारीरिक श्रमदान धन्यवादार्ह है। राग रागिनियों का निर्णय गायनाचार्य रसिकराज श्रीमैथिलीरमण शरण जी ने कृपापूर्वक कर दिया है। आपकी जय जय।

श्रीरसमोदकुञ्ज, श्रीअयोध्याजी
श्रीसरयू जयन्ती, सं० २०२८

रसिकाचार्या
श्रीमती रसमोदलता
चरणाश्रिता
रसकान्तिलता

शुद्धाशुद्धि पत्र

क्रमाङ्क	पृष्ठाङ्क	पंक्ति अंक	अशुद्ध	शुद्ध
१	३	८	जौन	गौन
२	७	१६	दीघ	दीर्घ
३	६	७	गील	गोल
४	११	१५	बाच	बीच
५	११	२०	हिमवत	हिमवंत
६	१३	१२	दिबावनि	दिवावति
७	१४	५	आ के	आपके
८	१५	११	चहुँदिसि	चहूँदिसि
९	१६	७	। हि	इहि
१०	१८	६	सखा	सखी
११	१६	१२	क	के
१२	३०	६	मन की	मन को
१३	३१	८	काक	कोक
१४	३१	१२	सारन	सारंग
१५	३४	१०	सुव	सुख
१६	३६	१६	प्यारी की	प्यारे की
१७	४१	१३	कासलराज	कोसलराज
१८	४१	१४	।मलि	मिलि

शुद्धाशुद्धि पत्र (उत्तरार्द्ध का)

क्रमाङ्क	पृष्ठाङ्क	पंक्ति अंक	अशुद्ध	शुद्ध
१९	५०	१७	इम	इभ
२०	५२	११	सदेहालकार	संदेहालंकार
२१	५४	६	बिमरी	बिसरी
२२	५७	६	इहैं	रहैं
२३	५९	४	प्रिय प्रीतम	प्रिया प्रीतम
२४	६०	२	झाँकी झाँकी	झाँकी झाँका
२५	६३	६	ताव ।	तावत
२६	१४	११	अघ ऊरघ	अध ऊरध
२७	६६	४	जु ल	जुगल
२८	७१	५	साहै	सोहै

❀ श्रीजानकीरमणो विजयतेतराम् ❀

❀ सर्वेश्वर्य्यै श्रीमत्यैचन्द्रकलायै नमः ❀

❀ श्री रसमोद माधुरी ❀

❀ आचार्य वन्दना ❀

❀ सोरठा ❀

वन्दौं गुरु परमेस, जिनकी महिमा को कहै।
थके गनेस महेस, सारद सेस रमेस जुत ॥१॥

❀ दोहा ❀

जिनकी पद-नख प्रभा से, हृदय सु होत प्रकास।
नसत तिमिर सूझत हिये, सिय पिय विपिन विलास ॥२॥

जय जय जय श्री जानकी, जय श्री अवध किसोर।
जय श्री नटवर वेष जू, जय रसिकन सिरमौर ॥ ३ ॥

वन्दौं चन्द्रकला अली, सकल सखिन सिरमौर।
कृपादृष्टि करिये हिये, सूझै रहस हिलोर ॥ ४ ॥

वन्दौं चारुसिलादि अलि, रूप गुनन की खान।
करुना करि हिय में बसो, उपजावहुँ रस ग्यान ॥ ५ ॥

वन्दौं श्री मन्मारुती, जिन सम रसिक न आन।
दयादृष्टि मोपै करो, दरसावहुँ रस ग्यान ॥ ६ ॥

वन्दौं श्री मज्जगत गुरु, रामानन्द महान।
रसिकन पंकज के लिये, उदित भानु भगवान ॥ ७ ॥
श्री श्री तुलसी दास जी, भाविक परम उदार।
कुटिल जीव निस्तार हित, वाल्मीकि अवतार ॥ ८ ॥
यद्यौ कहत सकुचत हृदय, हैं सिय पिय अवतार।
जगत गुरु विख्यात हैं, जिन रचि मानस सार ॥ ९ ॥
तिनके पद अरविन्द को, वन्दौं बारम्बार।
कृपा करैं दरसै हिये, सिय पिय रहस उदार ॥१०॥
श्रीमद् अग्राचार्य्य वर, सब रसिकन सिरताज।
रसिक सालि हित मेघ ह्वै, बरसायो रसराज ॥११॥
वन्दौं तिनके चरन रज, मम धन जीवन प्रान।
निज लघु किंकर जान कै, दरसावहु रस ग्यान ॥१२॥
श्री नाभा श्री बाल अलि, मधुराचार्य धुरीन।
रामसखे हरि रूप सखि, कृपानिवास प्रवीन ॥१३॥
रामचरन श्री रसिक अलि, जुगलप्रिया रसखान।
युगलानन्य प्रपन्न जू, और जे रसिक महान ॥१४॥
वन्दौं सब के पद कमल, सदा जोरि जुग पानि।
सब मिलिके करिये कृपा, लघुतर किंकर जानि ॥१५॥
रहस चार दिन दिन बढ़ै, हरहु अरस अग्यान।
मम अभिलाष पुरावहू, सब मिलि कृपानिधान ॥१६॥

वन्दौं जानकिजान पद, सखिन सहित रसरास।
नृत्यकला दरसाइकै, सब विधि पुरवहु आस ॥१७॥
राम रूप सम रूप नहिं, राम धाम सम धाम।
रामचरित सम चरित नहिं, राम नाम सम नाम ॥१८॥
बन प्रमोद सम वन नहीं, सरि नहिं सरजु समान।
राम रास सम रास नहिं, मुनि कोकिल किय गान ॥१९॥
रमु क्रीड़ा के अर्थ से, रामहि रास प्रधान।
औरन में वह जौन है, रस कवि करत बखान ॥२०॥
जो ईसन के ईस हैं, अवतारन अवतारि।
कारन के कारन अहैं, वरनत वेद प्रचारि ॥२१॥
सोई सीताराम हैं, अवध धाम के माँह।
विहरत सखिन अनंत जुत, सिय सँग दै गलबाँह ॥२२॥
क्वचित रास लीला करत, क्वचित करत जलकेलि।
क्वचित सिया सँग झूलहीं, क्वचित फाग रस झेलि ॥२३॥
एवं नित्य निहार में, प्रिया प्रेम रस लीन।
अवध छाड़ि गमनत नहीं, पग भर रसिक प्रवीन ॥२४॥
मंगल विपिन प्रमोद है, मंगल लली व लाल।
मंगल सखिन समाज हैं, मंगल रसिकन माल ॥२५॥

❁ निज सहज स्वरूप का षोडश शृङ्गार ❁

❁ रागिनी पीलू ❁

करि सोरहो सिंगार, पिया घर जाना ही होगा।
रति बिछिया प्रेमा सुमहावर, चमकत प्रभा अपार।
घृत स्नेह तदीय सुनूपुर, मधु मदीय मदकार ॥ १ ॥
ऊरु पर साटी साइ धारौ, कर मनसिज उदगार।
मान किंकिनी कटि में सोहै, प्रणय उरस्थल हार ॥ २ ॥
कुच पै राग अनुराग कंठमणि, महाभाव नथ प्यार।
रूढ़ सिन्दूर अधिरूढ़ सुकज्जल, सौभागिनि शुभकार ॥ ३ ॥
मोहन मोदन कर्णफूल धरु, जो सोहाग विस्तार।
शीशफूल मादन मनमथ सम, शीशोपरि सुठि धार । ४ ॥
यामें नित्य विलास सहस्रधा, केलि सुअपरम्पार।
रति स्थायी की यह सीमा, प्रबल अमित रसदार ॥ ५ ॥
यहि विधि करि सिंगार मनोहर, प्रीतम मन बसकार।
व्यक्तयौवना तू अति सुन्दर, गर्वीली गति धार ॥ ६ ॥
रमकि झमकि के पिय सँग मिलिके, देहि सुरति सुखसार।
तब तो सौभागिनि तू पियके, ह्वै जैहौ गरहार ॥ ७ ॥
तू वे वे तू ऐक्य होय कै, फिर नहिं द्वैत प्रचार।
यथा अंबुनिधि मिलिके सरिता, ह्वै नहिं एकाकार ॥ ८ ॥
शिव शुक सनक शेष श्रुति हनुमत, औ मुनि रसिक उदार।
यहि उपासना रस समुद्र में, मज्जत साँझ सकार ॥ ९ ॥

बिनु निर्हेतुक कृपा सीय की, यामें नहिं अधिकार।
यह 'रसमोद' बिना रसवेत्ता, जानत नाहि गँवार ॥१०॥

* श्रीसदगुरु-सखी की आरती *

* रागिनी देश *

आरति करिये गुरु सखि की, अँग अँग प्रति छवि की।
चरन कमल तल अति झलकत है।
जानु जंघ सोभा छलकत है।
कटि प्रदेस अदभुत राजत है।
किंकिनि रव कल की ॥ १ ॥
उदर रोमराजी सोहत है।
त्रिवलि तरंग गंग लहरत है।
कुच उतंग पिय मन करसत है।
सीमा सोभा की ॥ २ ॥
तापर कंचुकि झीन लसत है।
बाज नयन अँधियारी बसत है।
खुलतहि पिय मन झपटि लेत है।
सुधि न रहत तन की ॥ ३ ॥
मुख मंडल सोभा साजत है।
लखि पूरन ससि अति दबकत है।
कानन करनफूल लटकत है।
नयन कमल दल की ॥ ४ ॥

सिन्दुर विन्दु भाल दमकत है।
सीस चन्द्रिका अति चमकत है।
पृष्टि वेनि नागिन झलकत है।
सारी छवि वर की ॥ ५ ॥

जो यह आरति नित गावत है।
प्रेम भक्ति तेहि सिय बकसत है।
जय जय जय 'रसमोद' भनत है।
सब सुख साजन की ॥ ६ ॥

❀ सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकला स्तव ❀

❀ सवैया ❀

वारिज दीप्ति हरी पद पद्म,
सुमार्दव और ललाई ते प्यारी।
चहुँधा छिति लाल ह्वै जाय जबै,
तुव मंदगती प्रचरन्ति दुलारी ॥
वर्तुलकार उरू जुग से तुम,
रंभ स्तंभ के मान बिदारी।
वेगि द्रवो मम देखिदसा तुम,
चन्द्रकले सियकी अति प्यारी ॥१॥
किंकिन और विभूषन भूषित,
छीन कटी अवलोकि तिहारी।

जाइ लियो बनबास गयो जो,
रहो अभिमान गजारि को भारी ॥
सुभरे सौन्दर्ज नितंब प्रकास से,
चंद्र की सोभा भगी दिसिचारी।
कटि में परिनद्ध सोहावन वस्त्र,
सुसोभि रही जरितारि किनारी ॥२॥
पीपर पत्र समान महा,
मधुरोदर आप का है सुकुमारी।
रोम सेंवार से सोभि रहे,
त्रिवली अरु नाभि महाछवि धारी ॥
गंग के बीच में भौंर हिलोर सी,
राजि रही प्रमदा छविहारी।
मेरी विनय सुनि वेगि द्रवो अब,
आइके ताप हरो श्रम भारी ॥३॥
कुच उन्नत और कठोर महा,
अति दीर्घ दोऊ पिय के श्रमकारी।
ध्यान सुनिष्ठ दुशंकर के जुत,
कंचन के नग हैं जुग क्यारी ॥
श्रीफल हैं किधौं हैं घट हेम,
भरे रस प्रीतम के हियहारी।
किधौं जुग काम के कन्दुक है,
पिय के करसे अति लालित भारी ॥४॥

किधौं जुग काम की दुंदभि है,
निज कान्त विजय के जनावन हारी।
कंचुकि चित्र विचित्र के भीतर,
की जुग बाज सुपाले हैं प्यारी॥
प्रीतम के मन तित्तिर को,
झट जाइ के वेगि चपेटन हारी।
हाय हरो अह्लाद भरो तुम,
जानि सिया जू की दासि हमारी॥५॥
भूषन भूषित ग्रीव प्रकास,
कपोत सुग्रीव की कांति हरे री।
कंकन चूरी औ अंगद के जुत,
बाँह से हारि मृनाल भगे री॥
ठोड़ी के बीच बिराजत बिन्दु,
मनो रसराज के छौना लसे री।
हे श्री चन्द्रकले सर्वेश्वरि,
आय हरो मम दुःख सवेरी॥६॥
अधराधर बीच सुदंत की पंक्ति,
विराजत ईषत हास जुता है।
प्रातः सूर्य्य वो हीरा समूह औ,
विम्व प्रकाश पगे बहुधा है॥
सुक तुंड की सुन्दरता हर के,
सुप्रकासित घ्रान सुगंध भरा है।

नयन की सोभा निहारि के खंजन,
मीन औ कंज सुवारि बसा है ॥ ७ ॥
भौंह सलोन हैं आपके सुन्दर,
काम के चाप के दाप हरी है।
भाल विसाल में सिन्दुर बिन्दु सो,
लालित कान्ति प्रकासि रही है ॥
गोल कपोल महा दुतिवन्त,
सुचन्द्र छटा छवि छीन लई है।
नागिन सी अलकें दुहुँ ओर,
सुपीवत अमृत घेरि रही है ॥ ८ ॥
कोटिन सूर्य्य प्रभा को दवाय,
सुकर्न विभूषन छाजि रहा है।
मुख मंडल ऊपर चन्द्र करोरनि,
वारिये श्रीचन्द्रभानु सुता है ॥
नग से जु जड़े सिर ऊपर चन्द्रिका,
सर्व प्रकास को छीनि बसा है।
पृष्टोपरि पुष्पकली सों गुही,
सुविराजति वेनी सुगन्ध सना है ॥६॥
नागिन ही जनु स्वर्ण लतोपरि,
झूलि रही छवि फैलि रहा है।
रसरंग सुभूमि में प्रानपती के,
प्रताड़न को जनु काम कशा है ॥

श्याम सुसारी घटा अति कारी,
सुबिज्जु के ऊपर थान किया है।
ऐसो सुविग्रह चन्द्रकले!
भगिनी निज जानि दिखैहो कदा है।।१०।।

कबहूँ सरजू तट कुंज निकुंज के,
मध्य सखी गन से परिवारित।
वीन मृदंग औ गान सुशब्द से,
गूँज रहे सब कुंज प्रकासित।।
प्यारी औ प्रीतम मध्य लसैं,
तुम नृत्यन भाव अनेक दिखावत।
रीझ के हार गले से उतारि,
पिया तोहि ग्रीव में लै पहिरावत।।११।।

प्रीतम के सँग कन्दुक खेल में,
चंचलता अतिसय विस्तारी।
मन की अरु मारुत की गति को,
तुम जीति लई चन्द्रभानु दुलारी।।
अलकें मुख ऊपर आवत हैं,
तब वारति हो इक हाथ से प्यारी।
इक हाथ से गेन्द अकाश उछारो,
पिया ठकजक उरोज निहारी।।१२।।

होय विशेष विमुग्ध पिया,
तव दास की नाईं जो लोकनभर्त्ता।

होय पराजित तोहि प्रसंसत,
है प्रिये राउरि जीति सुयुक्ता ॥
लियो जु लगाय पिया उर में,
मुख ऊपर है श्रमबिन्दु प्रसिक्ता ।
ऐसो सुविग्रह चन्द्रकले !
दिखलैहौ कदा मोहि जानि असक्ता ॥१३॥
कबहूँ गल धाय लगे पिय जाय,
उरोज लगाय मिली सिय प्यारी ।
मनोज के ताप हरी अति शीघ्र,
पिया के सुशीतलता बिस्तारी ॥
अस दम्पति के सुख सेज विहार,
दया करिके दरसावन वारी ।
ह्वै सुप्रसन्न सुनो बिनती मम,
हे श्रीचन्द्रकले सुखकारी ॥१४॥
नृत्य के बीच में हंस सी गच्छसि,
रंग सुभूमि गयन्द की नाईं ।
मंडल यूथ सहस्रन में सखि,
राजति हौ अति सिंह सुनाईं ॥
शची अरु शारद लच्छि रती,
हिमवतसुता मिलिकै सब आईं ।
रूप तुम्हार विशाल विलोकि के,
गर्व गुमान सबै बिसराईं ॥१५॥

वीन प्रवाद में प्रीतम के सँग,
शर्त लगाइ के जीतन हारी।
यंत्र बजाइ के प्रीतम प्यारी,
रिझाइ के तू अपने वश कारी॥
तिहुँलोक के वीन प्रवादन को,
तुम जीत लई भये शिष्य तिहारी।
होहु प्रसन्न दया करिके,
हमरी सुधि लेहु सिया सखि प्यारी॥१६॥
देखि कै कोककला तुम्हरी,
पिय वारहिवार प्रसंसत है जू।
कोक विधान में देखे न आज लौं,
सो परतच्छ दिखाय मुझे जू॥
जानत हौं तव अंगहि से भव,
कोक कलान अहैं सिगरे जू।
समग्र रहस्य प्रदान करो,
मैं आपका हूँ अस बोले पिया जू॥१७॥
सुकृपा वल आपके साधन के विन,
होत महारस के अधिकारी।
बिन यत्न प्रयास सुदम्पति के सँग,
जीव अनेकन सौख्य सुधारी॥
यावत यूथन की यूथेश्वरि,
आयसु आपके कारयकारी।

हे सर्वेश्वरि चन्द्रकले !

भव बूड़त ते मोहि लेहु उबारी ॥१८॥

प्राकृत भाव से वर्जित दिव्य,

महारस उत्तम के अधिकारी ।

कोटिन साधन से नहिं प्रापति,

होत बिना करुनासु तिहारी ॥

जिनकी करुना के बिना ध्रुव नाहिं,

सुहोत प्रसन्न पिया सिया प्यारी ॥

सोइ करुना तब चाहत हौं,

हमहूँ श्रीचन्द्रकले ! सिय प्यारी ॥१९॥

हे श्रीचन्द्रकले ! सिय जू को,

तू मान दिवावनि प्रान पिया से ।

अपनी चतुराइ से मान छुड़ाय,

पिया को मिलावति प्रान प्रिया से ॥

दोऊन काम जगावति हौ,

तुम व्यंग भरी करिके बतियाँ से ।

हाय कदा तुम आनि दिखावगी,

आपन रूप सुविज्जु छटा से ॥२०॥

पाप प्रपंच भरे छलछिद्र से,

जन्म अनेकन संचित कारी ।

कोटि करे जो उपाय तऊ नहिं,

जाय सके पिय पास लों प्यारी ॥

ऐसेहु होय जो आपके आश्रित,
दौरि मिले सिय लै अँकवारी।
आपके आश्रित जानि सिया,
निज वत्सलता अतिशय विस्तारी ॥२१॥
कौन परत्व सुअद्भुत आ के,
जानत हैं श्रीराजदुलारी।
ब्रह्मादिक देवन से अति गोपित,
वैभव आपके हैं अतिभारी ॥
योगिन को गम नाहि जहाँ,
रघुवंश कुमारहुँ के भ्रमकारी।
ऐसिहुँ स्वामिनि पाइके मैं,
जग के अतिकष्ट सहौं विस्तारी ॥२२॥
ब्रह्मानि रमा अरु पारवती,
जिनके रुख पाइके कारजकारी।
जेहि लीला के भीतर विष्णु विधीश,
सबै बसिभूत ह्वै भौंह निहारी ॥
अपने ऐश्वर्य के आपहि जानहु,
और कोई नहिं जाननहारी।
सौलभ्य को धारि दया करिके,
मोहि आनि मिलो हौं दासि तिहारी॥२३॥
दंपति की सुअनंत सखी,
तेहि यूथ अनंत अनंत युथेश्वरी।

रूप भरी चतुराई भरी,
गुन ग्यान भरी इक एक सबै री ॥
तामें रूप गुनाधिकता करिके,
तुहि दम्पति ने अभिषेक करे री ।
ताहि दयो सर्वेश्वरि को पद,
श्रीमिथिलेश लली जु की प्यारी ॥२४॥
चित्र त्रिचित्र लगे मनि खंभ
हजारन हैं चहुँधा तिहि माँही ।
दरवाजन में परदे बहुते,
जड़िदार अनेकन रंगन काहीं ॥
मोतिन झालर जुक्त चहुँदिसि,
चाँदनी ऊपर में झलकाहीं ।
तिहि मध्य की भूमि सुचित्रित है,
तिहि ऊपर रेशम फर्स सुहाहीं ॥२५॥
यूथ अनेकन से परिवारित,
यूथेश्वरियाँ सब भी चहुँधा हैं ।
तिहि मध्य सिंहासन रत्न जड़े,
जिहि भानु अनेकन की परभा हैं ॥
तिहि ऊपर आप विराजति हौ,
बहु दामिनि की छवि छाइ रहा है ।
दुहुँ ओर सुयुग्म सखी कर चौंर,
चलावति हैं तिहि को समता है ॥२६॥

काचित छत्र लिये कर में,
सिर ऊपर आपके चाल रही है।
नृत्यन गानन बाजन की धुनि,
से सुसभा अति सोह रही है॥
अपनी गुन-चातुरता करिके,
सब लोगन को परितोष रही है।
इहि भाँति विचित्र सभा तव में,
नित होत सभा आश्चर्यमई है ॥२७॥
होत प्रभात सभा नित हीं,
अस आनन्द तो परमान बिना है।
जिनके बड़भाग सुहाग बड़ो,
सुप्रभात समै निरखै हरषा है॥
अस सौज समाज सभा तव की,
छवि आपनि मोहि दिखैहो कदा है।
हे श्रीचन्द्रकले! मम नैनन,
देखन को तरसाइ रहा है ॥२८॥
प्रात समय परजंक के ऊपर,
दम्पति काम कलोल सुराते।
नख अंकुस चिह्न लगे अँग में,
सब अँग खुले लिपटे मुसुकाते॥
यक यक वरांग के ऊपर में,
निज हस्त धरे रस में दोउ माते।

चन्द्रकले ! अस झाँकी दुहून,
हमें हिय में कबहूँ दरसाते ॥२६॥
जानौं न ग्यान न कर्म उपासन,
और सुसाधन एकहुँ नाहीं।
इहि काल कराल से तापित हौं,
बहुप्राय उपाधि लगावत जाहीं॥
दरसावहु रूप विभौ अपनो,
सखि वेगि विलम्ब सुलाबहु नाहीं।
मैं त्राहि हौं त्राहि हौं त्राहि कहौं,
सखि चन्द्रकले ! परतच्छ ह्वै जाहीं ॥३०॥

* दोहा *

यह रहस्य एकान्त को, पढ़िहैं जो चित लाय।
चन्द्रकला की कृपा से, पिय प्यारी सुख पाय ॥ १ ॥
पढ़िहैं जो नित नेम से, करुना हिय में लाय।
रूप छटा दरसाइहै, चन्द्रकला तिहि आय ॥ २ ॥
रसिकन हित मैं यह कह्यो, नारद स्तव काँहि।
को परत्व वर्नन करै, इनकी मया अथाहि ॥ ३ ॥
छूटे अच्छर जोरि कै, पढ़िहौ अति हरषाय।
'मोद' पाय मन में बड़ो, रखिहौ हृदय लगाय ॥ ४ ॥

—— ——

प्रमुख सखी नामावली प्रकाश

*** दोहा ***

* सेवाकुञ्ज की कुंजेश्वरी के नाम *

श्रीसदगुरु पद बन्दि के, चन्द्रकला सिर नाइ।
मुख्य वयस्या नाम की, कहौं सूचिका पाइ ॥ १ ॥
कनक भवन के हृदय में, राजत रुचिर पलंग।
प्रीतम प्यारी सहित तहँ, करत कलोल अभंग ॥ २ ॥
ताके परितः राजहीं, द्वादस कुञ्ज अनूप।
द्वादश में द्वादश सखा, मुख्य बसहिं अनुरूप ॥ ३ ॥
इक इक मुख्या की अनुग, सखिन हजारन संग।
सेवा सौज लिये खड़ीं, प्यारी पियहि सुरंग ॥ ४ ॥
दंतसुधावन कुंज में, 'शान्ती-शीला' जानु।
'मोदा' मोद भरी सदा, मज्जन कुंज सुमानु ॥ ५ ॥
'रंग मालिनी' रँग भरी, फाग-कुंज रसमात।
'रंभा' रुचिरा राजहीं, मंडन कुंज सुहात ॥ ६ ॥
सुभग कलेवा-कुंज में, ललित 'रोचना' वास।
सभा-कुंज में 'भावली', भरी भाव सुखरास ॥ ७ ॥
सुभग 'सुधाहस्ता' सखी, भोजन-कुंज विराज।
'मदन-मंजरी' मद भरी, सैनकुंज सुख साज ॥ ८ ॥

केलि कुंज सुख पुंज में, 'केलि कोविदा' धाम।
सुघर हिंडोला कुंज में, विद्यु ल्लता सुनाम ॥ ९ ॥
'रासवर्द्धिनी' कुंज में, सदा रास रस लीन।
'रुचिर वरधिनी' राजहीं, व्यारु कुंज सुख भीन ॥१०॥

❁ बागेश्वरियों के नाम ❁

ताके चहुँदिशि राजहीं, द्वादश बाग अनूप।
नन्दनादि उपबाग के, हैं सबही विधि भूप॥११॥
द्वादश में द्वादश सखी, अधिकारिणी सुजानु।
सेवा में यक यक की, अनगन सखि अनुमानु ॥१२॥
कोक-कला गुन आगरी, 'रतन मंजरी' नाम।
बन अशोक के मध्य में, करहिं सदा विश्राम ॥१३॥
पिय प्यारी रस-भाव क, बरसावत रस मेह।
'रसिक मंजरी' जानिये, बन रसाल तिहि गेह ॥१४॥
'कनकलता' कंचन सरिस, सदा रहत हुलसात।
बन तमाल के मध्य में, पिय प्यारो रस मात ॥१५॥
'रूपगर्विता' रूप में, गनत न काहू केर।
वसति सुचम्पक बाग में, लिये सखिन बहुतेर ॥१६॥
'चन्दनांगि' चन्दन सरिस, दम्पति शीतलकारि।
वसति सुचम्पक बाग में, अमित सखिन सहकारि ॥१७॥
'गुण आगरि' नागरि नवल, रतिरूपा सुखखान।
पारिजात बन नित करैं, पिय प्यारी गुन गान ॥१८॥

सुख राते माते फिरैं, युगल ललन छवि छाव।
विहरहिं सदा विहार बन, 'हेम मंजरी' नाँव ॥१९॥
पिय प्यारी अनुराग में, भीजि रही अँग अँग।
'अनुरागा' तासों कहैं, वसि कदम्ब रसि रंग ॥२०॥
नाग सुकेसर में सदा, 'कृष्णा' सखी बखान।
पिय प्यारी रस खेल में, रहत मगन हुलसान ॥२१॥
काम-कला में निपुन अति, 'रति मंजरि' रसखान।
बन अनंग की मुख्य यह, अधिकारिनी सुजान ॥२२॥
रूप मान गुनमान भरि, 'मदन मोहिनी' नाम।
पिय की सदा सुहागिनी, बन सिंगार सुठाम ॥२३॥
रहसि सुचित्र विचित्र के उवटति रहति हमेश।
बन विचित्र में राजहीं 'चित्रा' रँगे रसेश ॥२४॥
यहि विधि द्वादश बाग में, द्वादश सखी प्रधान।
इनके सुमिरन से सदा, समन सकल अघखान ॥२५॥

* अष्ट यूथेश्वरी *

इनकी चतुरावृत्ति में, अष्ट कुंज सुविशाल।
जिनके विभव त्रिलोकि के, सकुचि रहत सुरपाल ॥२६॥
अष्ट कुंज में अष्ट सखि, सबै शिरोमणि मान।
अष्टहुँ में यक मुख्य हैं सर्वेश्वरि तिहि जान ॥२७॥
पूरव उत्तर भाग में, महा विभव युत कुंज।
'चन्द्रकला सर्वेश्वरी', बसहिं लिये अलि पुंज ॥२८॥
चौदह विद्या में निपुन, चौसठ कला प्रवीन।
शिक्षक हैं सब सखिन की, पिय प्यारी रस भीन ॥२९॥

पूरब दच्छिण भाग 'श्री, परसादा' सुनिकेत।
बहुत सखिन सह बसहिं तहँ, पिय प्यारी रस हेत ॥३०॥
दच्छिण पूरब भाग में, श्री 'विमला' शुभ थान।
संग वयस्या बहु लिये, विलसत परम प्रधान ॥३१॥
दच्छिण पश्चिम भाग में, 'मदनकला' स्थान।
इनकी काम कलान को, को करि सकै बखान ॥३२॥
पिय प्यारी रस माधुरी, करहिं निरन्तर पान।
रस बरसावहि दुहुँन को, करहिं जबहि सुरगान ॥३३॥
चारुशिला जू जानिये, लिये सखिन बहु संग।
पश्चिम दच्छिण भाग में, निवसति भरि रस रंग ॥३४॥
रहसज्ञा रस रूपिणी, 'हेमा' सुख संदोह।
'छेमा' छेम विधायिनी, युगल ललन छवि जोह ॥३५॥
पच्छिम उत्तर भाग में, 'हेमा' सुखद निकेत।
उत्तर पच्छिम भाग में, 'छेमा' बसति सुचेत ॥३६॥
सूच्छम रहस विचार में, 'सुभगा' परम प्रवीन।
उत्तर पूरब भाग में, वसि दम्पति रस भीन ॥३७॥
अष्ट सखिन के नाम यह, नित उठि पढ़ जो कोइ।
भाव विलच्छण हीय में, अवसि फुरै जो गोइ ॥३८॥

❀ षट ऋतुकुंज की कुंजेश्वरियों के नाम ❀

ताके चतुरावृत्ति में, द्वादश कुंज सुहाय।
तामे युगल सुभेद है, कहैं रसिक जन गाइ ॥३९॥

ऋतु अनुकूला एक है, ऋतु सारूपा अन्य।
षट अनुकूला जानिये, षट सारूपा मन्य ॥४०॥
अनुकूला सोइ जानिये, ऋतु प्रति रुचै जु जाहि।
ऋतु प्रति यथा सरूप है, सारूपा कहि ताहि ॥४१॥
सारूपा रितु कुंज में, परधाना हैं जोइ।
ताको नाम सुजानिये, बरनत हौं अब सोइ ॥४२॥
वासन्ती में जानिये, 'चन्द्रा' शुभ स्थान।
ग्रीष्म कुंज में मानिये, 'चन्द्रावती' प्रधान ॥४३॥
'चन्द्रमुखी' प्राविट गृही, सखिन लिये सन्दोह।
शरद सरूपा महल में, 'चन्द्रप्रभा' मुख जोह ॥४४॥
महल हेमन्त स्वरूपिका, सखी 'हिमकरा' जानु।
'चन्द्रकरा' शिशिरा महल, बसति सखिन युत मानु ॥४५॥
'श्यामा' बसति वसन्त के, अनुकूला गृहि माह।
'रामा' बसि ग्रीषम महल, सदा सहित उत्साह ॥४६॥
प्राविट अनुकूला महल, 'अमला' करति निवास।
शरदकुंज 'कमला' बसति, पिय प्यारी मन बास ॥४७॥
हेमांगी' हेमंत में, शिशिर 'विशदाची' जान।
एक एक प्रति अनुग बहु, सेवै सुख रस सान ॥४८॥
पंच आवरन लौं कहीं, मुख्य सखिन के नाम।
यहि विधि षष्टम सप्त में, सखियन के हैं धाम ॥४८॥
छिति के रजकन भलि गिनौ तारा गन समुदाय।
पिय प्यारी की सखिन की, गिनती करि नहिं जाय ॥४९॥

सोई धन्य सुधन्य हैं, भाविक रसिक रसेश।
इन सखियन की शरण ह्वै, उमगत रहत हमेश ॥५०॥
इन सबको जाने बिना, मिलै न महल निवास।
वे कबहूँ नहिं जानि है, पिय प्यारी सुखवास ॥५१॥
लोभी दम्भी लालची, जिनमें ऊसर ज्ञान।
तिनको नहीं सुनाइये, रसिकन को यह ध्यान ॥५२॥

❋ श्री प्रिया जू की एकाङ्गिनी सेवा ❋

(श्री मिथिला भाषा में रचित पद)

❋ रागिनी बहुली ❋

सिय जू क सँग हम रहवइ, महा सुख पैवइ ॥टेक॥
उवटन कय स्नान करैवइ, चीर स्याम पहिरैवइ ॥ १ ॥
चरन कमल सुमहाउर लगैवइ निरखि निरखि हुलसैवइ।
रतन जड़ित नूपुर अति सुन्दर, चरन उपर पहिरैवइ ॥ २ ॥
कटि महँ किंकिनि राग उरोजनि, चित्र विचित्र बनैवइ।
हार हमेल आओर गर भूषन, निरखि निरखि पहिरैवइ॥ ३॥
बाजूबन्द विजायठ कंकण, कर चूरी पहिरैवइ।
छल्ला मुदरी नगन प्रकासित, अँगुरी महँ सुधरैवइ ॥४॥
भाल सिन्दूर नयन में काजर, धारन करि वलि जैवइ।
करण-फूल कानन पहिरैवइ, सीसहुँ फूल धरैवइ ॥५॥
नखसिख में सिंगार सुरुचि कय, निरखि निरखि न अघैवइ।
बहुविधि व्यंजन थार परोसव, अपनहि हाथ खुऐवइ ॥६॥

पान पवाय सुअतर लगैवइ, दरपन, लय दिखरैवइ।
फूलनमय सय्या सुठि रचि कय, पिय प्यारी पहुरैवइ ॥७॥
नव नव केलि अनूपम लखि लखि, स्वाद अनूपम पैवइ।
बीरी बसन सुगन्ध पवन कय, तहँ सेवा सुकरैवइ ॥८॥
सुरति सुसिन्धु मगन दोउ होइथिन, ताही माँहि नहैवइ।
ई 'रसमोद' कृपा सद्गुरु के, होयतनि तब हम पैवइ ॥९॥

❋ रागिनी सुघरई ❋

हमारी सिया सुन्दरता की सीमा।
अंग अंग प्रति कोटि रमारति, वारौं निधरक ही माँ ॥१॥
मुख छवि निरखिचन्द्र नभ में गये, भ्रमत लाज दुख जी माँ।
पिय की जीवनि मूरि सजीवनि, छन बिछुरत दुख भीमा ॥२॥
वारत राई लोन छिनहि छिन, वारि उतारत पीमा।
लखि 'रसमोद' सुअंग माधुरी, पान करत न अघीमा ॥३॥

❋ श्रीसिय जू का आध्यात्मिक स्वरूप ❋

❋ दोहा ❋

महाभाव रस रूपिणी, चिन्तामनि सुखसार।
सिय को जानु सरूप यह, रसिकन के हितकार ॥ १ ॥
पिय सुमनोरथ पूर हित, सदा रहति लयलीन।
इहै काज इनके सदा, पिय के गुनगन भीन ॥२॥

चन्द्रकलादिक सखिन गन, काय व्यूह सिय जान।
आध्यात्मिका स्वरूप सुनु, इनहिं रसिक दै ध्यान ॥ ३ ॥
इन पर पिय के नेह जो, अधिक अधिक दिन रैन।
वहै सुगन्ध सुउबटनौ, अंग सुगंध उठैन ॥ ४ ॥
करुना रूपी अमिय की, धार माँझ असनान।
प्रथम हुआ इनका सखी, जानु करुन स्थान ॥५॥
तरुन अवस्था रूप जो, मधुर सुधा रस धार।
तामें मज्जन मध्यमा, हुआ इन्हें सुख सार ॥६॥
लावण्यामृत रूप रस, करि अन्तिम स्नान।
लाज रूप रँग श्याम को, सारी धारी जान ॥ ७ ॥
लाल रूप अनुराग को, लाल दुपट्टा धार।
प्रणय मान की कंचुकी, ढकि उरोज रस सार ॥ ८ ॥
सुन्दरता केसर कही, मन्द हास्य कर्पूर।
प्रणय रूप चन्दन मिल्यो, अंगराग छवि पूर ॥ ९ ॥
तापर पिय शृङ्गार रस, मृगमद चित्रित जान।
सिय जू के अँग अँग से, नव सुगन्ध लहरान ॥१०॥
पिय के प्रति जो वक्रता, अरु प्रच्छन्न जो मान।
वही केश-विन्यास है, प्रीतम को रसदान ॥११॥
धीराधीर सुभेद से, प्रियतम प्रति जो रोष।
वही रेशमी वसन है, चमकत अति निर्दोष ॥१२॥
पिय अनुराग तमोल है, ह्वै रह अधर सुलाल।
प्रेम पूर जो वक्रता, नयनन अंजन लाल ॥१३॥

सात्विकादि संचारि सह, हाव भाव पिय चाह।
अंग अंग भूषन सोई, उर उमगत उत्साह ॥१४॥
उत्तम गुन गन जाल जो, वहै फूल की माल।
अंग अंग धारन किये, विलसैं सिय जू वाल ॥१५॥
प्रेम भरी अति विकलता, रतन धुकधुकी सोइ।
सब विधि शोभित ह्वै रही, सिय जू के हिय जोइ ॥१६॥
सिय सुहाग वर्धन तिलक, ललित भाल पर सोह।
प्रेमाप्रौढ़ा जानिये, वेसर पिय मन मोह ॥१७॥
मनोवृत्ति अहनिशि लगी, पिय लीला रस रास।
मध्यम वय वाली सोई, सखि अवली चहुँपास ॥१८॥
निज अँग की शोभा सोई, भवन रमन पिय जान।
लसैं गर्व परयंक पै, चिन्तत पियहि मिलान ॥१९॥
पिय रस जस गुन नाम हैं करणफूल रस खान।
श्रवण सुशोभित ह्वै रही, सुख पुनि सोइ धुनि गान ॥२०॥
शाश्वत प्यारी मधुर रस, पियहि करावति पान।
मदन मनोरथ सफल सब, करति रहति हरषान ॥२१॥
पिय बिच प्रेम विशुद्ध सोइ, रतनावलि की खान।
सीय कलेवर जानिये, शुभ गुनगन को थान ॥२२॥
उमा रमा रति राधिका, जहँ लगि सुष्टु सुनारि।
सिय सुहाग के सामुहे, होतहि बनति भिखारि ॥२३॥
अनवधि कला विलास की, इनते सिकता पाइ।
रत्यादिक विलसैं सबै, निज थल सुख न अघाइ ॥२४॥

जिनके गुण सुअनन्त को, स्वयं न जानहिं राम।
सो गुन किमि बरनन करै, सुजड़ जीव अघ धाम ॥२५॥
अध्यात्मिक यह रूप सिय जो जन करिहैं गान।
'मोद' सुरस तिनके हिये रहै सदा सरसान ॥२६॥

❁ षटऋतु विहार पदावली ❁

❁ चैता ❁

खिली गुलाब की कलियाँ रे भँवरा, तू रस ले आ।
जौं तुम यहि छन नहिं आवहुगे, तो ह्वै है पछतैया ॥
भरि मकरंद गुलाब की कलिया, मनसिज जंग मचैया।
भँवर सिरोमनि नाम कहा के, बैठे छिपि कदरैया ॥
मनसिज सर तुअ हिय बेधन करि, लाऊँगी बरियैया।
कलि आगे हाहा करवैहौं रस दैहौं मधुरैया ॥

❁ चैता ❁

बैठे जुगल विहारी री सजनी, दिये गलबाँही।
पान बिरा पिय प्यारी मुख दिये, देत पिया मुख प्यारी।
पान खात बतरात परस्पर, हँसि हँसि अलक सँवारी ॥
कबहुँ परसपर मुख चूमत हैं, पीवत अधर सुधारी।
कबहुँ लटक पिय प्यारी ऊपर, पिय ऊपर सिय प्यारी ॥
कबहु बलैया लेत परस्पर, राई लोन उतारी।
यह रसमोद' निरखि सुख अहनिसि, होत पलक नहिं न्यारी ॥

श्रीहनुमन्निवास बड़े महाराज की जन्म बधाई

*** राग सोरठ ***

श्री गुरु जनम को आनन्द।

मास माधव तीज शुक्ला, त्रिविध दुखकर मन्द।
चिरजिवे श्रीमतिशरण जू, स्वामि सुखमा कन्द॥
अवध सरजू सहित उमगत, निरखि गुरुमुख चन्द।
रीझ बाँटति हरषि हिय बहु, बोलि सज्जनवृन्द॥
करत जन्म उछाह गुरु को, मिटत सब दुख द्वन्द।
यह सुउत्सव सुख निरखि, 'रसमोद' परमानन्द॥

मुंगेर वाली श्रीसियारामदासी एवं श्रीराज दुलारी सहचरी को पत्र द्वारा ग्रीष्मकुञ्ज बिहार का उपदेश

*** दोहा ***

सहित यूथ सखि गन सिया, रघुवर ग्रीषम कुंज।
गये जहाँ सीतल बनै, खसखाने सुख पुंज॥ १॥
छाजे कंज गुलाब अरु, मल्ली सुरभि अरंक।
लेपित चन्दन अगर घन, सार सुकेसर पंक॥ २॥
सींचे अगर सुगन्ध वर, मुक्त गुच्छ बहु सोह।
कहूँ झरोखा मनिन मय, लखि मनमथ मनमोह॥ ३॥

ताड़ वेत सूक्षम वसन, पाट मयूर कलाप।
सुरचित बृंत अनेक विधि, कर तै डोलत आप ॥ ४ ॥
नीर जंत्र नाना धरे, भरे सुसीतल वारि।
चहूँओर तिनते झरत, मंजुल मिहीं फुहारि ॥ ५ ॥
तापर सरजू जल परसि, कोमल बहत समीर।
सुरभि झरोखन तें प्रविसि, करत सरीरन सीर ॥ ६ ॥
होत खड़ी रोमावली, कंपत सबके गात।
ग्रीषम ग्रीषम कुंज में, हिम रितु सों दरसात ॥ ७ ॥
तामधि मोतिन को तखत, लखत महा सुख होत।
नखतनाथ पूरन कला, लजित होत लखि जोत ॥ ८ ॥
कुसुम सेज तापर लसी, बसी दयानिधि हीय।
बैठारे तिन पर सखिन, सुन्दर प्यारी पीय ॥ ६ ॥
सुरभि सने कोमल मिहीं, वसन सँवारे अँग।
भूषन मनि मुक्तान के, प्रति अंगन करि संग ॥१०॥
चन्दन खौर विचित्र रचि, लाल लली के भाल।
केसर रोरी को दियो, बीच विन्दु छवि जाल ॥११॥
ताज रसिक सिरताज सिर सिय सिर सारी सोह।
जरी किनारी जगमगै, लखि रतिपति रति मोह॥१२॥
धूप दीप करि पुनि धरै, भोजन कंचन थार।
सविधि रसाला करि धरी, विविध मसालादार ॥१३॥
सितोपला अरु कंद रस, रतन कटोरन कीन।
मेवा पकवाने दही, खोवा मिश्री दीन ॥१४॥

अगनित गनै अचार को, सीतल वारि सुगन्ध।
अन्तर अन्तर में पियत, भोजन साज प्रवन्ध ॥१५॥
सरजू जल अँचवाय पुनि, दीन्ही पान सखीन।
करि आरति सुवृंत अरु, चमर छत्र गहि लीन ॥१६॥
जंत्र सुतंत्र बजाइ बहु, नृत्य गान पुनि कीन।
लली लाल मन की अली भली भाँति सुख दीन॥१७॥
यहि विधि ग्रीषम कुंज में, करि विहार रघुनाथ।
सखियन को अति सुख दियो, पिय प्यारी मिलि साथ॥१८॥

* झूलन बिहार *

* रागिनी सूहा *

झूलन की आई बहार, चलो सखि झूलने।
सजि सोरहो सिंगार मनोहर, नइ नइ तान उचार।
हरषि झुलावहुँ पिय प्यारी को, गावहु राग मलार॥
झुकि झुकि झूलत पिय प्यारी दोउ, रसमय अंग निहार।
गहि गहि भुज दोऊ मिलि लपटत, नहिं तन वसन सम्हार॥
प्यारी कहैं पिया को प्यारी, पिय कह सियहि पियार।
यह सावन उमगावन सब मन, हरषावन सुख सार॥
दम्पति रूप बिलोकि नयन भरि, तन मन धन सब वार।
यह 'रसमोद' झुलन सावन के, कोकवि वरननहार॥

—*—

* राग सोरठ *

छबीली झूलत प्रीतम संग।

दहिन ओर श्री प्रानपियारे, भुज से भुज लपटंग ॥
पान खवावत खात परसपर, करत बात रसरंग।
तुम होउ प्यारी मैं होउँ प्रीतम, खेलौं खेल अनंग ॥
प्रीतम ह्वै मैं तुम्हें भुलावौं, याचौं सुरति सुरंग।
नहिं नहिं कहि तुम नाक सिकोरौ, तब मोहि बढ़ै अनंग ॥
नव नव मदन कला दरसावौं, जो नहिं काक प्रसंग।
बात करत दोऊ हिय उमग्यो, धरि धरि लइ अंग अंग ॥
अरस परस आलिंगन चुंबन, अधरद नख छत अंग।
नव नव केलि करत दोऊ मिलि, 'मोद' भई लखि दंग ॥

* राग सारन *

सरयू कूले झमकि दोउ झूले।

अलकें आइ रही मुख ऊपर, हुमकि हुमकि दोउ हूले ॥
दोउ मुख चन्द चकोर होइ दोउ निरखि निरखि दोउ फूले।
हँसि हँसि पेंग बढ़ावत दोऊ, स्यामगौर सुख मूले ॥
नइ नइ केलि करत झूलन पर, रसिकन मन अनुकूले।
यह 'रसमोद' अनूपम अद्भुत, इन सम और न तूले ॥

[पत्र रूप में प्रेषित]

* दोहा *

सावन रंग हिंडोरना, दम्पति दै गलबाँह।
झूलन सखिन झुलावहीं, उमगि उमगि मन माँह ॥१॥

झूलत दोउ अनुराग युत, ह्वै रह चन्द चकोर।
सखिजन हरषि झुलावहीं, छवि निरखहि तृनतोर ॥ २ ॥
उड़ि उड़ि अलकैं मुखन पर, आवत सखि चितचोर।
नाग सुतन अमि हेतु जनु, चन्दहि करत निहोर ॥ ३ ॥
दुहुँदिसि प्यारी की लटें, उरज युगल पर लोल।
सिव के ऊपर नाग जुग, बहुविधि करत कलोल ॥ ४ ॥
अतिसय बढ्यो हिंडोल जब, प्यारी पिय उर माहि।
लपटी तरुन तमाल पर, कनकलता झलकाहि ॥ ५ ॥
विम्ब विम्ब ही को गहे, सिव ऊपर सिव सोइ।
सिंह सिंह दोऊ मिले, रंभ रंभ पै जोइ ॥ ६ ॥
अद्भुत छवि की माधुरी, फैलि रही चहुँ ओर।
जड़ चेतन सबहीं बुड़े, आनन्द सिन्धु हिलोर ॥ ७ ॥
बन प्रमोद सरयू सुतट, कुंज निकुंजन माँहिं।
झूलत गलबाहीं दिये, पिय प्यारी उमगाहि ॥ ८ ॥
मुख से मुख हिय से हिया, नैनन नैन मिलाय।
फूलि रहै नव कंज से, प्रेम न हृदय समाय ॥ ९ ॥
झूलन पै बैठे दोऊ, पिय प्यारी मुसकात।
दोउ दिसि पेंग झुकाइके, झुलवत सखि हरषात ॥ १० ॥
प्यारीप्रेम में पिय रँगे, प्यारी पिय रँग रात।
दोउन के मुखचन्द पै, अलक छटा छहरात ॥ ११ ॥

———

श्रीसियारामदासी को पत्र रूप में

गलवाहीं बैठे दोऊ, झूलन साज समाज।
झुलवहु गाइ बजाइ के, प्रेमलते सुखसाज ॥ १ ॥
झूलन झोंकत परस्पर, पिय प्यारी हरषाय।
प्रेमलता निरखहु छटा, अखिल सोक बिसराय ॥ २ ॥
नख सिख भूषन साज के, पिय प्यारी दोउ साथ।
झूलत झमकि हिंडोलना, सखि गावहि गुनगाथ ॥ ३ ॥
झूलन पर बैठे दोऊ, करत सुरसमय बात।
प्रेमलता निरखहु छटा, तोड़ि जगत के नात ॥ ४ ॥

दूसरे पत्र में

सावन मनभावन सुखद, त्रिविध समीर झकोर।
बन प्रमोद सरयू पुलिन, बोलत विहँग अथोर ॥ १ ॥
कोउ प्यारी प्यारी कोऊ, पिय पिय कहत उड़ात।
लता विटप अरुझात है, बसुधा हरित लखात ॥ २ ॥
श्रीसरयू तट कुंज में, झूला ललित ललाम।
सखी झुलावहि गावहीं, झूलत स्यामा स्याम ॥ ३ ॥
घन घमंड गरजत गगन, नन्हि नन्हि बुन्द सुहात।
चपला चमकत दुरत पुनि, लखि सिय अंगन कान्त ॥४॥
अतिहित दोउ छतियाँ लगे, रस बतियाँ बतरात।
चूमि चूमि मुख परस्पर, मन्द मन्द मुसकात ॥ ५ ॥

स्यामगौर सुखमा सदन, लखि लज्जित रति मैन।
क्रीट चन्द्रिका सिर भुकत, छवि शोभा के ऐन।। ६ ।।
नील पीत फहरात पट, पान खवावत खात।
चहुँदिसि सखि सेवा लिये, छवि लखि बलिबलि जात।७।
वाद्य अनेक बजाइ सखि, छाई तान तरंग।
हावन भाव कटाच्छ सखि, झूलत दंपति संग।। ८ ।।
गावहिं मेघ मलार सखि, श्रीसरजू लहरात।
यह समाज अवलोकि के, रती काम सकुचात।। ९ ।।
यह झाँकी झाँकहु सदा, हिय के ताप मिटाय।
जैहै दुख सब भूलि तुव, अतिसय सुख सरसाय ।।१०।।

श्रीसियारामदासी के पत्रमें हिमऋतु बिहार वर्णन

*** दोहा ***

ब्याह विभूषन साज के, सुन्दर कोहवर माँहि।
बैठे दोउ इक साथ में, सखि निरखत चहुँधाँहि।। १ ।।
प्यारे के सिर मौर है, प्यारी के सिर मौरि।
लतिका प्रेम सुभाव भरि, छवि निरखति तृन तोरि।। २ ।।
दूलह मुख छवि देखि कै, दुलहिन हिय न अघात।
दुलहिन मुख छवि देखि कै, दूलह बलि बलि जात।। ३ ।।
दुलहिन के मुखचन्द में, दूलह नैन चकोर।
दूलह के मुख कमल में, दुलहिन नैन सुभौंर।। ४ ।।

प्यारी के सुख के लिये, प्रीतम तन मन वार।
प्यारे के सुख के लिये, प्यारी सरवस वार ॥ ५ ॥
प्यारे मन लम्पट अधिक, प्यारी रस में लीन।
छिन वियोग दुख होत है, जैसे जल बिन मीन ॥ ६ ॥

❀ बसन्त एवं फाग बिहार ❀

* राग काफी *

होरी खेलन चली सिया प्यारी।
चन्द्रकला विमलादि सखी सब, कर कंचन लिय पिचकारी।
उरज उतंग मध्य अति खीनी, यौवन मद रस मतवारी ॥
कारी लटें उरज पर सोहैं, जनु नागिन जुग फुंकारी।
नयन बान तीखे बरसावत, प्रीतम ऊपर रस कारी ॥
यूथ यूथ सखियन मदमातीं, गावत चली सरस गारी।
रंग गुलाल उड़ावत बोलत, पिय को पकरि करौ नारी ॥
प्रीतम यूथ लिये सखियन के, सखा रूप कर पिचकारी।
दोउ दिसि ते रँग बरसन लागे, मनहुँ मघा की झरि भारी ॥
भिरहिं परस्पर एकहिं एकन, पिचकन मारि करैं रारी।
दौरि प्रिया धरि लई लाल को, मसलि गुलाल कियो नारी ॥
प्रीतम रूप बनी प्यारी तब, बैठे दोउ गलभुज डारी।
यह 'रसमोद' जुगल प्रीतम के, निरखि निरखि सखि बलिहारी

श्रीसियारामदासी के विविध पत्रों में वसंत बहार

* दोहा *

सिसिर सुहावन कुंज में, बैठे दोउ पिय प्यारि।
पान पत्रावत परस्पर, रसमय बचन उचारि ॥ १ ॥
हेमलता के मध्य में, नारंगी फल लाग।
तापर कमल सुधारिके, धन पायो रस राग ॥ २ ॥
मंगल सिसिर सुहावनो, आये सुठि रितुराज।
पिय प्यारी दोउ उमग में, सजत बसंती साज ॥ ३ ॥
मंगल कुंज सुहावनो, मंगल सिय पिय साज।
मंगल अलि अवली लसै, मंगल बजत सुबाज ॥ ४ ॥

* सोरठा *

दम्पति जुत अहलाद, करि वसन्त उत्सव भलो।
अधरामृत परसाद, पठवत रस अनुराग भरि ॥ ५ ॥

* सवैया *

पाइ के प्रेम प्रसाद सिया, पिय नाम रटो मनलाइ सदाई।
रूपके ध्यान धरो हिय में, बिचरो सिय कुंज निकुंज निकाई॥
खेलो वसंत पिया सँग में, अपने मनमें नित प्रेम लड़ाई।
और कछू नहिं चाह करौ, नित माँगौ सियाजू की किंकरताई॥

* सोरठा *

जैहैं दुख सब भाग, नेक नजर पिय हेरते।
पिय मिलिहैं गर लाग, दुष्टन के मुँह मोर के ॥ ७ ॥

* चौपाई *

सियसियपिय रसकेलि विहारा। मगन होहु तामहँ निसिवारा
तुम अपराध जोग नहि प्यारी। श्रीसियपिय गुन भूषनधारी। ८

* दूसरे पत्र में होरी विहार वर्णन *

* दोहा *

कुंज जानकी रमन में, बढ़ो सरस रन रोर।
इक दल प्यारी का सजा, दूजा नृपति किसोर ॥ १ ॥
जुटी परस्पर फौज दोउ, परी कुंकुमन मार।
एक न एक उठाइ कै, देत कुंड में डार ॥ २ ॥
प्यारी के दल झपटि कै, प्रीतम फौज बिडार।
पिय दल अलि भागन लगी, धरि धरि रँग में डार॥ ३॥
चन्द्रकला तब झपटि कै, पिय पकड़ी बरजोरि।
हक बक एकौ ना चली, मसलि कपोलन रोरि ॥ ४ ॥
पिय से हार लिखाइ कै, लै गइ सिय पहँ वाल।
प्यारी भी हँसि लाल के, मसल्यो गाल गुलाल ॥ ५ ॥
फवै गुलालन गाल पै, पिय की सुछवि अपार।
देखि देखि वलि वलि गई, 'मोदलता' सुखसार ॥ ६ ॥
प्रेमलता सँग में लिये, सिय को करी जुहार।
दोनों के गर में दयो, प्रीतम सुन्दर हार ॥ ७ ॥

*** सवैया छन्द ***

प्रेमलते दिन रैन रहै, सिय स्वामिनि के पद प्रीति घनेरी ।
रास विलास पिया संग में, सिय के अवलोकहुँ रंग भरे री ॥
हौ तुम प्यारी दुलारी किशोरी की,वत्सलता तुहि पै अतिसैरी
लाड़ पियार तुम्हार सियाजू के,देखिकै 'मोद' हिये हुलसेरी ८
मो हिय में तुम बास करो, अरु हौंहु हिये तव नित्य बसोंरी ।
मैं अरु तैं सबही दिन संगिनि, भिन्न कदापि न हीय धरोरी ।
मैं अरु तैं संग ही सँग में,जुग रूप विलोकि हिये हुलसो री ।
संसारके ताप बुझैंगे सबै,सिय स्वामिनि दृष्टि निसाकर सो री ९
सौच बिचार के दूर करो, अब आय वसन्त सबै सुखदो री ।
होरीमें प्यारी की ओरसे लाल के,गाल गुलाल लगावहु रोरी।
यूथेशा श्रीचन्द्रकला सँग, प्रीतम को पकरो झकझोरी ।
नारि सुरूप सँवारि सियाजू के,आगे नचावो बजाइ हथोरी।१०

श्रीराजदुलारी सहचरी के पत्र में फागकेलि वर्णन

*** दोहा ***

राजदुलारी सहचरी, प्रेमलता अनुराग ।
युत प्यारी की ओर से, पिय सँग खेलहुँ फाग ॥ १ ॥
नैन सैन सिय पाय के, भरि भरि मूठ गुलाल ।
पिय के भींजे अंग में, डारहु रस भरि वाल ॥ २ ॥
जब पिय झपटैं तोहि पै, लीजो मेरी ओट ।
करना लाल बिहाल सखि, करि कुमकुमन सुचोट ॥ ३ ॥

कबहूँ प्रीतम पकरि कै, धरि लैहै भरि गोद।
मुख चुंबन करिहैं जतन, करि करि विविध विनोद॥४॥
अधरामृत रस पान को, देना नहिं तुम वाल।
कहना यह तन सीय के, जानहुँ सब विधि लाल॥ ५॥
जौं यह रस चाखन चहौ, गहौ सीय पद पीय।
उनसे आग्या लेइ कै, तबै जुड़ावहु हीय॥ ६॥
यहि विधि विहरहु रैन दिन, दम्पति केलि प्रवाह।
प्यारी कृपा कटाच्छ से, मिटि जैहैं जग आह॥ ७॥
मम वानी अमृतमयी, करहु श्रवन पुट पान।
काल च्छेप सुख जुत करौ, अन्त पिया पुर जान॥ ८॥

❀ मंजु छन्द में कनक महल की होरी ❀

कनक महल मधि फाग चौक इक, सुन्दर ललित विसाला है।
ता मधि बैठे प्यारी प्रीतम, निज निज गोल रसाला है॥
कुमकुम पिचका सब कर लीन्हें, लपटत झपटत वाला है।
दुहूँ ओर रँग रारि मची अति, काहू सुधि न सँभाला है॥१॥
भगी फौज प्यारी की तब तो, रहि गय एकै लाला है।
तब प्यारी प्यारे को पकड़ी, दइ गुलाल लै गाला है॥
मानहुँ स्याम कमल दल ऊपर, पद्मराग मनि आला है।
गलबाँही दीन्हें दोउ बैठे, लखि 'रसमोद' निहाला है॥२॥

—❀—

श्रीसियादुलारी जी के पत्र में धामनिष्ठा उपदेश

*** हरिगीतिका छन्द ***

सिया दुलारी सिय पिय प्यारी जग सुख स्वाद बिसारी ।
पिय प्यारी के चरन कमल में, भ्रमरी ह्वै मतवारी ॥
कनक भवन के मध्य सेज पर, दम्पति गल भुज धारी ।
सुरतानन्द मगन दोऊन को, निरखहु पलक बिसारी ॥१॥

*** दोहा ***

यावत जग के स्वाद हैं, नीम सरिस कटु जान ।
दम्पति सुख रस स्वाद को,को करि सकै बखान ॥ २ ॥
दम्पति रूप पयोधि में, नैन मीन करि प्यारि ।
दिवस निसा विचरा करौ,जग सुख स्वाद बिसारि॥३॥
अवध धाम के दरस को, तरसत रहु दिन रैन ।
इक दिन प्यारी लाल को, निरखहुँगी भरि नैन ।.४॥

* उज्ज्वल उत्कण्ठा *

*** तिलक कामोद ***

कब होइहै मन मेरो, अवध मधु मखियाँ ।
पिय प्यारी के रहस अनूपम, लखि लखि हिय हुलसैयाँ ॥
कुंज कुंज प्रति जुगल माधुरी, लखि द्रुम लता लुभैयाँ ।
मदमाते रसमत्त दुहुन को, नैन सैन अलसैयाँ ॥
निरखि निरखि के मदन रंग छवि, दोउ की लैहौं बलैया ।
यह 'रसमोद' पाइ निसिवासर, जग के स्वाद नसैया ॥

श्रीसियारामदासी के पत्र में अशोक बन बिहार वर्णन।

* तोमर छन्द *

श्रीमद् अशोकारम्य। जहँ पुरुष के नहिं गम्य॥
जहँ पादपा बहु जात। रंग रंग के सुविभात॥
तापै लता लपटाय। लखि मदन के मद जाय॥
फूले विविध रँग फूल। तिनपै भँवर बहु झूल॥
ताकी सुगन्धन धार। पवमान कर संचार॥
चहुँ ओर सुरभि झकोर। मह मह उठत घनघोर॥
जेहि नासिका महँ जाय। बरबस अनंग जगाय॥
कलकंठ सुक पिक मोर। बोलत मधुर कर सोर॥
जहँ कुंज है बहुरंग। लखि मीनकेतन दंग॥
तहँ लिये सखिन समाज। सिय संग कोसलराज॥
मिलि करत बहुरस केलि। दंपति मदन रस झेलि॥
नहिं गनत दिन औ रात। छन ब्रह्म को दिन जात॥
यहि सुख सुकारिये चाय। लतिका सुप्रेम बढ़ाय॥
यह आसिषा है मोर। यहि में बसै चित तोर॥

* अन्य पत्र में—दोहा *

जुगल सरोरुह चरन में, भृंग बने दिन रैन।
पान करो मकरन्द को, चाखि चाखि हिय नैन॥ १॥

श्री अशोक बन कुंज में, बिहरत स्यामा स्याम।
प्रेमलते भरि नैन यह, निरखहु होइ निकाम ॥ २ ॥
प्रात समय उठिके दोऊ, आलसमय रस नैन।
गाढ़ालिंगन मिलि रहै, झलकत अँग सुख मैन ॥ ३ ॥
अलक सँवारत परस्पर, व्यंग दोऊ बतरात।
झाँकि झाँकि के प्रेमलता, सुख पावहुँ दिन रात ॥ ४ ॥

❀ अपने आचार्यों के सहित युगल ध्यान ❀

❀ सवैया छन्द ❀

केलि सुकुंज मनोहर पुंज रमै नितही सिय प्रीतम अंग।
चन्द्रकला श्रीहेमलता श्रीप्रीतिलता सखि सोहत संग ॥
मधुरलता रस की बतियाँ कहिके जु बढ़ाव अपार उमंग।
'मोदलता' निरखे हरषे सियलाल पै वारत कोटि अनंग ॥ १ ॥

❀ रोला छन्द ❀

केलि कुंज रसपुंज जहाँ विहरै पिय प्यारी।
सखि सोहै चहुँओर सौज कर लिये सुधारी ॥
कोउ चामर कोउ छत्र विजन काहू कर धारी।
कोउ जय जयति उचार सुछवि पै ह्वै बलिहारी ॥ २ ॥
कोउ मृदंग मुरचंग कोऊ बीना करधारी।
कोउ गावै कोउ नचै लेइ गति न्यारी न्यारी ॥
'मोद' लिय कर पानदान सिय ओर सम्हारी।
तत्सुख सब अधिकार स्वसुख नहिं कोउ अधिकारी ॥ ३ ॥

* युगल विहारी के प्रति रूपानुरक्ति *

* सिन्धुरा काफी *

दोऊ खेलि रहे नयनन में।
पान खात मुसकात मनोहर, गसि रहे अँग अँगन में।
रूप माधुरी पान सुकरि करि, अतन छाय अँग अँग में॥
नव नव केलि करत दोऊ मिलि, नव यौवन के उमँग में।
एक एक को देखि देखि के, तृपित होत नहिं मन में॥
एक के ऊपर एक उतारि के, वारि पियत छन छन में।
अधरामृत को पान सुकरि करि, गहि गहि भुज लपटन में॥
दम्पति की यह केलि सुअद्भुत, बसि रहि सखि नयनन में।
यह 'रसमोद' प्रिया प्रीतम के, कहत न बनै कथन में॥

* भ्रमर निवारण लीला *

* दोहा *

सिय सुगन्ध फैली जबै, कुंजन कुंज अकास
भ्रमर झुंड मड़राय कै, धाय सिया मुख पास॥ १॥
अलिन उड़ावन के लिये, करि उपाय श्रम पाइ।
नाहिं उड़े तब धाय कै, सिय पिय अँग लपटाइ॥ २॥
पीतम चादर छोर ते, भँवरन भीर उड़ाय।
सिय मुख श्रमकन देखि कै, पवन करै मुसुकाय॥ ३॥

पिय बोले सुनु प्रानिनी, वचनन वीर बखान।
एक भ्रमर नहिं उड़ि सक्यौ, कौन वीर के मान ॥ ४ ॥
भ्रमर उड़ावन ते पिया, वीर बनौ मन माहिं।
जहाँ वीरता मैं करौं, ठहरौगे तहँ नाहिं ॥ ५ ॥

श्रीसियारामदासी जी को पत्र द्वारा पूर्वराग परक विरह जगाने का उपदेश।

❋ सोरठा ❋

पिया मिलन की आह, सदा रहे हिय में बनी।
औरो कछु नहिं चाह, सब से मुख फेरे रहौ ॥ १ ॥
कब ऐहै वह दीन, जा दिन प्रीतम नैन भरि।
निरखि निरखि अँग पीन, पुलकित तन छकि छकि रहौं ॥ २ ॥
मुख सों सुमिरो नाम, श्रवन सुजस सुनि सुनि छकै।
सब अँग करो प्रनाम, नयन निरखु घन विज्जु छवि ॥ ३ ॥
विरह ज्वाल उर साल, बिन देखे प्रीतम प्रिया।
उठत रहत सब काल, जब से बिछुरे मम पिया ॥ ४ ॥
सतगुरु मेरे साह, जबर बुलाइ मिलाइ हैं।
यहै एक उत्साह, समुझि समुझि हरषित रहौं ॥ ५ ॥
मेरे दीन दयाल, श्री सतगुरु महराज जू।
दूती लगि तत्काल, आन मिलैहैं ललन दोउ ॥ ६ ॥

नीचे की पंक्ति श्रीमहाराज नित्य प्रातः गाते थे।

कब हुई है वह दिनमां सुदिनमाँ कि निरखब पियरवा के भरिनैना

आजा सिय पिय एक वार झलक दरसाजा।
अंगों की अदा अजूब बुन्द बरसाजा ॥

श्रीसियारामदासी जी के यहाँ उपदेश मय पत्र प्रेषण।

* दोहा *

श्री स्वामिनि मिथिलेशजा, दसस्यन्दन नृप लाल।
श्री मति चन्द्रकला अली, करिहैं तोहि निहाल ॥ १ ॥
हेम महल के मध्य में, पिय प्यारी रस रार।
दरसैहैं छन छनहि प्रति, तुहि करिहैं अति प्यार ॥ २ ॥
सब से आसा तोरि के, कुरु सरनागत आस।
प्रतिघातक सब नासि कै, तोर पुरैहैं आस ॥ ३ ॥
जैसे रावन मारि कै, तिलक विभीषन सार।
तस सत्रुन मुख तोरि कै, तुहि करिहैं गरहार ॥ ४ ॥
स्वामिन के बल गर्व से, निर्भय रहु सियदासि।
का करिहैं संसार भट, होइहैं आपु विनासि ॥ ५ ॥
जब तक हौ संसार में, सुमिरहु श्रीसियनाह।
अंत महल में जाइकै, देखिहौ विविध उछाह ॥ ६ ॥
यहाँ नहीं तो वहाँ अलि, षटऋतु भोग विहार।
करिहौ तुम अरु देखिहौ, सँग रघुवर भरतार ॥ ७ ॥
सब घबराहट छोड़ि के, यह निश्चय मन मान।
निर्भय होय बिताइये, परारब्ध अवसान ॥ ८ ॥

बाह्य मानसिक जो कछुक, बनै सु कुरु कैंकर्ज।
मुख से सीताराम कहु, मिटि जैहैं सब मर्ज ॥ ६ ॥
जै मिथिलाधिपनन्दिनी, जै अवधेसकुमार।
जै श्री चन्द्रकला अली, रसिकन प्रान अधार ॥ १० ॥
बन प्रमोद के मध्य में, सखिन सहित सियलाल।
प्रेमलते बिचरत दोऊ, छवि लखि होहु निहाल ॥ ११ ॥
कबहुँक रास विलास में, पिय प्यारी दोउ मत्त।
तहँ की छवि अवलोकि कै, रहहु सदा अलमस्त ॥ १२ ॥
कबहुँक वर परयंक पर, दोउ मिलि करत कलोल।
तहँ की केलि विलोकि कै, मन को करौ अलोल ॥ १३ ॥
परारब्ध बस जहँ रहौ, तहँ जुग रूप निहारु।
हानि लाभ बिसराइ कै, तन मन धन सब वारु ॥ १४ ॥
का करिहैं जग दुष्ट सब, सिय पिय तुम्हरे साथ।
सब विधि भय बिसराय कै, सेवहु प्रिय सियनाथ ॥ १५ ॥
सब विधि धीरज धारि कै, करु मुंगेर निवास।
शीघ्रहि सिय जु बुलाइहैं, करिहौं सत्यावास ॥ १६ ॥
विघ्न कैसहूँ आ पड़े, मन से धैर्य न जाय।
का करिहै जग लोग सब, नसहिं स्वयं अनखाय ॥ १७ ॥

*** सवैया छन्द ***

नेमरु प्रेम से प्रेमलतहिं तुम, सेवहु सहचरि राजदुलारी।
सेवन के फल थूल मिटे पर, पावहुँगी मिथिलेस दुलारी ॥

हौ मिथिलेस लली की अली, अस जानि महासुख में रहु प्यारी
वारहि बार सिखावत हौं तुहि, हौ सहचरि तुम राजदुलारी। १८

* दोहा *

चिन्ता कौने बात की, धरी वाह सिय नाह।
बेखटके परवाह बिन, पहुँचोगी तू ताह ॥१६॥
मुख से सीताराम कहु, तन से करु सब काम।
अन्त सिया पद पाइहौ, नहिं कछु यामें खाम ॥२०॥

श्रीसियारामदासी के पास उपदेश मय अन्य पत्र।

* दोहा *

सीताराम सनेह में, सदा रहै मन लीन।
औरो कछु नहिं चाहना, ह्वै रहु सब विधि दीन ॥ १ ॥
पिय प्यारी के मिलन हित, उत्कंठित निसि भोर।
रहहु चहहु नहिं आन कछु, जग से रहु दिलतोर ॥ २ ॥
परारब्ध के भोग से, नेक न नाक सिकोर।
सियाराम दासी बनौ, युग मुख चन्द चकोर ॥ ३ ॥

❀ वार्ता ❀

रसिक चित चन्दन, जगत अभिनन्दन, श्रीचक्रवर्त्ती नन्दन, रसिक रस वर्द्धन श्री मैथिली प्राण सञ्जीवन जू के करुणा, वात्सल्यादि गुणगणों को नित्य स्मरण करती रहना। यही मुख्य धर्म्म है। सदा निर्भय रहना।

'बने तो रघुवर से बने, बिगरे तो भरपूर।
'तुलसी' औरन ते बने, ता बनवे में धूर॥'

इति श्री रसमोद माधुरी पूर्वार्द्ध सम्पूर्णम्।
शुभंभूयात्।

❀ श्रीजानकीरमणो विजयतेतराम् ❀

❀ सर्वेश्वर्यै श्रीमत्यै चन्द्रकलायै नमः ❀

❀ श्रीरसमोद माधुरी ❀

(उत्तरार्द्ध)

❀ छप्पय ❀

जय अनन्त प्रियकंतप्राणवल्लभा पियारी।
जय प्रियतम-मन-मीन सुधा सरिता सुकुमारी॥
जय वल्लभ-गत अंक रहसि कल्लोल सुचारी।
प्रियतम रसरण-खेत विजय प्रापक सुखकारी॥
जय सुख पर्यंक विहार में, बिन दुकूल रम दोउ।
लखि सखि'रसमोद'सुमाधुरी,केलि झमकि बरसोउ।१।

जय अनन्त सियकन्त संत रसवंत सहायक।
जय अशोक बन कुंज पुंज रस रास करायक॥
जय प्रमोद बन लताकुंज सिय रस बस धायक।
जय सरयू जल केलि करन ललना रस प्यायक॥
जय कनक सदन सुख सेज पै, रति सुख विलसत दोउ।
लखि सखि 'रसमोद' सु आँखियाँ, कह रसकेलि न सोउ।२।

गत अंक = गोद में बैठी हैं। सुआँखियाँ ... न सोउ = पर्यंक विहार का प्रत्यक्षदर्शी तो दृगभोगी सखियों के नयन हैं, पर नयनों में बोलने की शक्ति नहीं, कहें तो कैसे ?

❋ श्रीप्रिया प्रियतम प्रहेलिका विलास ❋

❋ सोरठा ❋

हिय में भरी उछाह, श्री विदेह नृप नन्दिनी।
करि बिचार मन माह, पूछत भइ रघुचन्द सों ॥ १ ॥

❋ दोहा ❋

सुनहु राजनन्दन प्रिय, कमल अधोमुख सोह।
ताके दल पंगति अहै, दल प्रति बुधपितु जोह ॥ २ ॥
अब्ज उपर हंसावली, तापर सरघर साज।
तेहि ऊपर रंभा बसे, इभरिपु तापर आज ॥ ३ ॥
जातरूप नग ताहि पर, तापर दर सुचि राज।
राहु शत्रु तापर बसे, लिये शुक कमल समाज ॥ ४ ॥
चोरसुखद तापर बसे, तापर बसे तमारि।
दोउ दिसि मुक्ताअंब है, जवात्रिक को धारि ॥ ५ ॥

अधोमुख कमल = चरण तलुवे। दलपंगति = चरणांगुलियाँ। बुधपित = चन्द्रमा, यहाँ चरणनख। हंसावली = नूपुर। सरघर = बाणों का निवास स्थल अर्थात् तरकस, यहाँ पिंडुरी। रंभा = कदली स्तंभ यहाँ, उरू। इभरिपु = हाथी का शत्रु अर्थात् सिंह, यहाँ कटि। जातरूप नग = सोने का पर्वत, यहाँ उरोज। दर = शंख, यहाँ कंठ। राहु शत्रु = चन्द्रमा, यहाँ मुखमंडल। शुक = नाशिका। कमल = नयन। चोर सुखद = अन्धेरी रात, यहाँ केश। मुक्ताअंब = मोती की जननी सीपी, यहाँ कान। जैवत्रिक = चंद्रमा, यहाँ ताटंक।

तेहि दोउ दिसि अहि धाइके, करत चन्द रस पान।
हौ प्रवीन तो कहहु पिय, लेहु सुघर रसदान॥ ६॥

*** सोरठा ***

दै उत्तर रघुलाल, मन्द मन्द मुसुकाय के।
करि अनुभव रस आल, प्यारी सन पूछत भये॥

*** मंजु छन्द ***

सुनिये राजनन्दिनी प्यारी, देखति हौ नहि प्यारि।
घन पै रवि रवि में कवि शुक्रयुत, शशि तहँ करत विहार॥
तामें है युग कुण्ड मनोहर, सुधा मुधा कर स्वाद।
खेचर वनचर जलचर सुख युत, नित बस रहित विवाद॥

घन = श्रीप्रिया जू की कंचुकी। रवि = श्रीप्रियाजू का पदिक। कवि = शुक्र, यहाँ प्रियतम की नाशामणि। शुक = श्री प्रियतम जू की नाशिका। शशि = श्रीप्रियतमजू का मुख मंडल। श्रीप्रिया पदिक में नाशामणि युक्त नाशिका से सुशोभित श्रीप्रियतम मुखचन्द्र प्रतिविम्बित हो रहा है, वही मानो सूर्य में चन्द्रमा का विहार करना है। खेचर = खंजन पक्षी। वनचर = मृगा। जलचर = मीन। ये तीनों नयन की उपमायें हैं। अन्यत्र तीनों तीन विभिन्न स्थलों के वासी हैं, इनका एकत्र रहना संभव नहीं है। पर नयनों में तीनों उपमान बनकर पारस्परिक कलह छोड़ एकत्र रहते हैं।

* घनाक्षरी कवित्त *

हेमलता मध्य गिरि मेरु सुविराजत हैं,
तापर सुध्यान धरे सोहत त्रिपुरारी है।
तापर सुनागराज सोहत मुख पंच किये,
पाँचों मुख ऊपर पाँच चन्द को सुधारी है॥
कैधों लता बिजुली के मध्य में सु श्रीफल हैं,
तापर सनाल कमल अर्ध ह्वै खिलारी है।
कैधों चम्पलता मध्य हेम कलश अमिय भरे,
ताको रस लेन हेत बैठ्यौ शेषकारी है॥

श्रीप्रियावक्षोज पर श्रीप्रियतम हस्तकमल के लिये तीन संदेहालकार उत्प्रेक्षित हुये हैं। हेमलता = श्रीप्रिया जू का सरस सुकुमार विग्रह। मेरुगिरि = वक्ष प्रदेश। ध्यान धरे त्रिपुरारी = दोनों उरोज। नागराज = श्रीप्रियतम भुजा। पंचमुख = पाँचो करांगुलियों से युक्त श्रीप्रियतम का हाथ। पाँच चन्द = हस्त नख। सुश्रीफल = उरोज। सनाल कमल = भुजदंड सहित हाथ। अर्धखिला = वक्षोजों पर आरोपण काल में आधी मुड़ी हुई तलहत्थी।

श्रीमती रसमोदलता जू श्रीसियास्वामिनी जू के प्रति अन्योक्ति विलास पूर्वक श्रीप्रियतम मुख छवि वर्णन करती हैं।

* रेखता *

लखु अद्भुत रचना प्यारी। मैं जाउँ तेरी बलिहारी॥
लखु स्याम घटा झुकि आई। तहँ चन्दा देत दिखाई॥
तेहि मध्य दरी शुचि कारी। ऊपर दुइ अब्ज खिलारी॥
तेंहि मध्य नचै युग नारी। युवतिन के मन बसकारी॥
तिंहि ऊपर धनुष विराजै। युग वान सुभग अति साजै॥
तिहि ऊपर उड़गन जोती। सँग तिमिरन अति झलकोती॥
यह अद्भुत नहिं कहि जाती। सँग दिनकर तिमिर सुपाँती॥
युग नागिन कारी कारी। युवतिन पहँ चलि फुंकारी॥

स्यामघटा = श्रीप्रियतम का सम्पूर्ण विग्रह। चन्दा = श्रीप्रिय मुख मंडल। दरी = कन्दरा, यहाँ कान। अब्ज = कमल, यहाँ नयन। खिलारी = देखोरी, खिला हुआ है। युग नारी = नयनों की पुतलियाँ, घूमना ही नाचना है। धनुष = भौंह। वान = तिलक रेखा। उड़गन = जुल्फों में गूँथे मणिमुक्ता। तिमिरन = अलकावली। दिनकर = क्रीट। तिमिर सुपाँती = केश समूह। कारी नागिन = कपोल पर लटकी अलक लट।

तब नाग करे धरुहारी। अन्याय करौ नहिं प्यारी॥
'रसमोद' कहै सिय प्यारी। यह अद्भुत रचना भारी॥

✻ दोहा ✻

हेम सुवल्ली मध्य में, भूधर युगल बिराज।
तामधि चित्र विचित्र करि, चित्रित श्री रसराज॥ १॥
तापर फूल गुलाब को, तापर ईश विराज।
तापर पंकज सोन रँग, अधमुख शोभा साज॥ २॥
ताकी पँखुरी पंच है, पाँचौ पर उड़राज।
सखि अद्भुत छवि देखि कै, बिसरी तन मन साज॥ ३॥
हेमलता शुचि गिरि शिखर, खेलत अति सचु पाय।
कठिन युगल फल से रपट, पुनि पुनि देत सुहाय॥ ४॥

नाग = प्रिय की भुजा। श्रीप्रियतम अपने हाथोंसे कपोल पर छहरती हुई अपनी बिखरी लटों को सम्हाल रहे हैं, मानो नाग (प्रियभुजा) अपनी नागिनी लटों) को (धरुहारी) पकड़कर रोक रहा हो। युवतियों पर अलकों का मदन विष व्यापने वाला प्रभाव डालना ही नागिनी का अन्याय करना है।

भूधर = नितंव। रसराज = श्याम साड़ी। चित्र विचित्र बेल बूटे कढ़े हैं। गुलाब फूल = श्रीप्रिया गुप्ताङ्ग। ईश = उरोज। सोन = लाल। अधोमुख कमल = श्रीप्रियतम तलहत्थी। पंच पँखुरी = पाँचो करांगुलियाँ। उड़राज = चन्द्रमा, यहाँ हस्त नख। शुचिगिरि को पलटना विपरीत आसन के निमित्त। कठिन युगल फल = उरोज।

शुचिगिरि को पलटन लिये, किये अनेक उपाय।
तदपि न किंचित हूँ हटी, रस को अति बरसाय ॥ ५ ॥
यहि विधि प्रीतम प्रानिनी, करत न केलि अघात।
यह 'रसमोद' सुमाधुरी, लखि लखि वलि वलिजात ॥ ६ ॥

*** दोहा ***

वेद कमल मुख अध किये, ऊपर नाल विराज।
हंसादिक द्विज तासु मधि, अद्भुत शोभा साज ॥ १ ॥
तापर यमभगिनी अहै, तापर सरयू सोह।
तापर ब्रह्माणी अहै, अति विचित्र छवि जोह ॥ २ ॥
ताके चहुँ दिशि हंस गण, बोलत सुन्दर बोल।
तामधि करिणी के सहित, नाग सु करत कलोल ॥ ३ ॥
कदली से कदल मिले, सिंह सिंह ही मेल।
सर से सर दोऊ मिले, बिंब बिंब मिलि खेल ॥ ४ ॥
कमल कली विकसित अली, तामे भमर गुँजार।
निकसत पैठत छनहि छन, रस चूसत सुखसार ॥ ५ ॥

वेद = चार। अधमुख कमल = चरण तलवे, दो प्यारी के, दो प्यारे। नाल = जंघ। हंसादिक द्विज = नूपुर क्षुद्रघंटिकादि। यम भगिनी = यमुना, श्रीप्रिय के पादपृष्ठ। सरयू = नखपंक्ति। ब्रह्माणी = सरस्वती, महावर का चित्राम। हंसगण = नूपुर। करिणी = श्रीप्रिया जंघ। नाग = हाथी, श्रीप्रिय जंघ। कदली = उरू। सिंह = कटि। सर = उदर। बिंब = अधर।

कबहूँ घन पर विज्जु है, बिज्जू पर घन सोह।
दोउ मिलि रस बरसावहीं, सखि अद्भुत छबि जोह ॥ ६ ॥
त्रिवेणी यहि को सदा, जो सेवत दिन रात।
वाके सुख वरनन करन, को कवि यहि जग जात ॥ ७ ॥
स्वामिनि जू की कृपा से, रसिक मगन यहि माहिं।
रूक्षन अति भयभीत ह्वै, सुनतहिं श्रवन पराहिं ॥ ८ ॥

*** चंचरीक छन्द ***

देखो सखि आज रात, क्षीरसिन्धु में विभात,
संपा घन मध्य युगल, लहरिराज सोह री।
ताकत निज डाट घाव, जुटत हटत लेत दाव,
वापी मधि मीन मगन, उछरै मन मोह री ॥ १ ॥
हंसनि की अवलि घेरि, करत शब्द बेरि बेरि,
मानहुँ जय हेतु विविध, मधुर जंत्र बाजरी।
कबहूँ जुग भोग धाय, पूजत शिव को मनाय,
कबहुँ कंज ऊपर रस, लेत कंज राज री ॥ २ ॥
उलटि लता पलटि घटा, किलकत युग परिघ जुटा,

घन पर विज्जु = विपरीत रति काल में। जग जात = संसार में जन्म लिया है।

क्षीरसिन्धु = श्वेत चादर बिछी सेज। संपा = विजुली, श्रीप्रियाजी। घन = प्रिय। लहरिराज = क्रीड़ाकालीन चंचलता। वापी = प्रिया अंग। मीन = प्रियतम अंग। हंसनि की अवलि = नूपुर की मणियाँ। भोग = नाग, यहाँ प्रिय भुजा। शिव = उरोज। परिघ = उरु।

मानत नहिं तानत भक, भोरत इतरात री।
देखत यह अपन नैन, कहत नहीं बनत वैन,
गुंगे गुड़ खात 'मोद', कहत न सकात री ॥ ३ ॥

श्रीप्रेमलता सियारामदासी के पत्र में)

* दोहा *

छतियाँ सो छतियाँ लगीं, बतियाँ कहि रस भाय।
अधरन सो अधरन लगे, दम्पति रस बरसाय ॥ १ ॥
अंग अंग सो मिलि रहे, मन सों मन मिलि जाय।
तउ तरसत दोऊ इहैं, नेक न चित्त अघाय ॥ २ ॥
वसन छूट गे वपुष से, हार टूट बिथराय।
यह सुख संपति प्रेमलते, भावहिं में दरसाय ॥ ३ ॥

* दोहा *

जुगल रंभ के मध्य में, सरिता है यक लाल।
मीन प्रवेसन चहत है, बनज हटावत वाल ॥ १ ॥
ईषत विकसे कमल कलि, ताहि भ्रमर फैलाय।
छिन बाहर छिन भीतरे, रस चाखत मन भाय ॥ २ ॥
रह्यो ह्रस्व कोमल प्रिये, मीन सुभाविक जुष्ट।
देखि निम्नगा कठिनता, धारि भये अति पुष्ट ॥ ३ ॥
जल अधार सकुचो नहीं, कमल से कमल हटाय।
करि प्रवेस दरियाव में, बिचरहु जस मन भाय ॥ ४ ॥

भ्रमर एवं मीन = श्रीप्रिय अंग। ईषत = थोड़ा। ह्रस्व = छोटा।
निम्नगा = नदी।

* रागिनी उमा तिलक *

* पद *

कहवाँ बिताई ऐसी काल री, आली मोरी।

छन छन नव नव केलि अनूपम,
अद्भुत रंग रसाल री ॥
लपटन झपटन बोस अलिंगन,
रतिपति निरखि निहाल री।
मसकन कसकन वसन सुछोरन,
और अनूपम ख्याल री ॥
झरत मकरधुज रस अँग अँग प्रति,
काहू सुधि न सम्हाल री।
दोउ रतिपति वस मिलत परस्पर,
लखि 'रसमोद' निहाल री ॥

* मंजु छन्द *

आवो आवो पास पिया मोहि खेलौं मनसिज खेल।
मैं हारौं तो तुव वस होइकै, दैहौं सुख रस रेल ॥
तुम हारो तौ तुम सों करिहौं, रति विपरीत सुकेल ॥
सुनि पिय ललकि सिया ढिग आये, मदन सुरस वश भेल।
दोउ मिलि कोककला से धरिधरि एकहि एक दबेल ॥
एक एक को जीतिवे इच्छा दोऊ वीर जुटेल।
सुरस शास्त्र से करन लगे दोउ काम कलोल झमेल ॥

सावन भादो झरि जस लागत तस बरसत रसरेल।
दोउ मिलि कोक कला से धरि धरि एकहि एक दवेल ॥
हारे लाल सिया जीती करि मन भावन रति खेल।
यह 'रसमोद' प्रियप्रीतम को रसिकन दृगन बसेल ॥

* राग जोगिया *

* पद *

आजु सखि राति पर्यंक मचकंत,
लचकंत सियकंत किलकंत खेलैं।
सारी सरकंत रति सदन झलकंत,
पिय देखि पुलकंत रतिकंत मेलैं ॥
चूड़ी की कटकनी नूपुर सुठनकनी,
कुचनि को मर्दनी सौख्य फूलैं।
देखि रसजंग 'रसमोद' भइ दंग,
रसकेलि रहि संग, सुधि वाहु भूलैं।

* पर्यङ्क विहार *

* कुंडलिया *

कनक भवन के हृदय में, राजत रुचिर पलंग।
तापर प्यारी पीय दोउ, करत कलोल अभंग ॥
करत कलोल अभंग कोक विधि से दोउ नागर।
अपने अपने दाव जीत उत्साह उजागर ॥
कच बिखरे गरहार पलँग पर चहुँदिशि चमकत।
बिन दुकूल अंग अंग लुनाइ प्रतिदिशि छलकत ॥

*** दोहा ***

अस झाँकी झाँकी करो, मन बुधि चित बिसराय।
जिनको यह फीको लगे, धिग तिनको जग जाय ॥ १ ॥
लाल लाड़िली नेह में, मगन रहौ दिन रैन।
काल धर्म नहि व्यापिहैं, बरसैहैं रस मैन ॥ २ ॥
नहीं रात नहिं दिवस है, नहीं साँझ नहिं भोर।
केवल रति कल्लोल है, सुख बरसत चहुँ ओर ॥ ३ ॥
नहीं भूख नहिं प्यास है, नहि स्नान न ध्यान।
केवल रास विहार है, प्यारी सुख की खान ॥ ४ ॥
यह सुख जिन पायो सखी, और चाह गइ भूल।
जैसे अमृत पाय कै, और न ताकै तूल ॥ ५ ॥

*** रेखता ***

सुनु सुनु सहेलि रस प्यारी। क्या भूलि रही भ्रम भारी ॥
सिय चरण कमल मकरन्दे। भ्रमरी ह्वै रमु निर्द्वन्दे ॥
सिय प्यारी महल उपासी। रसकेलि सु करहु खवासी ॥
सिय प्यारी सुख रस नदियाँ। पिय मदन बुन्द झर झरियाँ॥
निरखो रसकेलि अनोखी। नयनों की त्यागि निमेषी ॥

*** मंजु छन्द ***

देखो देखो देखु सखो री, अद्भुत एक तमासा है।
पद्माकर में घन को देखा, तापर बिज्जु बसाया है ॥

बड़ो अकोमल फल जुग छिन छिन पयद सुदेत दपेटा है।
मदन खड्ग को रत्यासर में लै बोरा झकझोरा है॥
लचकत मचकत हुचकत कुलकत श्रमकन धार बहाया है।
यह 'रसमोद' प्रिया प्रीतम को, सखियन नैन बसाया है॥

* मंजु छन्द *

स्याम घटा बिच विद्युत छवि लखि ह्वै रहु वलि वलि प्यारी।
तन मन धन निवछावरि करिकै, निरखहु साँझ सकारी॥
या दुनियें की लटकि छोड़ि कै, अटकहुँ रूप मँझारी।
अस अवसर फिर नाहिन मिलिहै, कह 'रसमोद' पुकारी॥

* रोला छन्द *

कनक भवन सुख सदन रमत प्रीतम सिय प्यारी।
सखि अनन्त कर सौज सुसेवति जुगल विहारी॥
दम्पति छवि अवलोकि रहति निसि दिन मतवारी।
मुग्धा मध्या और विदग्धा रति गुन भारी॥ १॥
विहरत कुंज निकुंज केलि नाना रस कारी।
कहुँ चौसर सतरंज सुखेलत बाजी धारी॥
कहुँ कन्दुक जलकेलि करत रसमय सुखकारी।
कहुँ शय्या पर केलि कोक विधि से बिस्तारी॥ २॥
कहुँ प्यारी पद स्वकर लेइ पिय जावक धारी।
निरखि निरखि वलि जात प्रेमकन आँखिन वारी॥

कहुँ अति प्रेमावेश क्रिया विपरीत सुधारी।
सेवहुँ इन थल माँह नागरी युत पिय प्यारी॥ ३॥

* युगल केलि *

* दोहा *

गलबाहीं दीन्हें खड़े, मन्द मन्द मुसुकाय।
प्यारी लट पिय अलक से, उरझी नहिं सुरझाय॥ १॥
अधरन पै लाली लसै, कुंडल लोल कपोल।
देखत ही मन सबन को, लेत सखी बिन मोल॥ २॥
चन्द सरोवर में सखी, कमल खिले अनमोल।
ता ऊपर भौंरैं लसैं, रस चूसत बिनु बोल॥ ३॥
श्रीसीता मुख कंज को, भृंग सु राज कुमार।
करत पान मकरन्द को, घूर्मित दृग रतनार॥ ४॥
कुटिल अलक नागिन मनौं, गंडन परि छहरात।
दौरि डसत युवतीन को, विष व्यापत सब गात॥ ५॥
प्रिया पिछौती बैठि पिय, लट गूथत कुशलात।
एक एक ऐंठान पै, कला भिन्न दरसात॥ ६॥
कमल शाख अधराशना, गहि विम्बहि रस लेत।
घूर्मित दृग झुकि झुकि परे, हिय उमड़त रस सेत॥ ७॥
रदछादन पिय पान करि, मत्त होइ बररात।
हौं प्यारी तू हौ पिया, प्यारी सौं बतरात॥ ८॥

अलक सँवारत कबहुँ पिय, चूमत कबहुँ कपोल।
परिरंभन करि लेत कहुँ, बाढ्यो सुरस अतोल ॥ ६ ॥
प्यारी के मुख चन्द में, पिय के नयन चकोर।
करत पान रस रश्मि को, सुधि बुधि नहि कछु और ॥१०॥
हेम सुगिरि के शृंग से, उतरि चले युग शेश।
वाम दहिन शिव शैल पै, बैठे मनहुँ रसेश ॥ ११ ॥
पुनि शुचिरस गिरि गुहा ते, निकसि नाग यक धाइ।
चाहत उन्हें हटाय के, शिव पूजन सचु पाइ ॥ १२ ॥
तावन विद्युल्लता से, कमल नाल युत धाय।
पकरि नाग के कंठ को, बल करि दियो हटाइ ॥ १३ ॥
पुनि उज्ज्वल गिरि विनय सुनि, संपा दया सुधारि।
नाग कंठ को तजि दई, चल्यो पुनः फुंकारि ॥१४॥
शिव ऊपर फन राखि कै, रस चूसत सचु पाय।
करत प्रशंसा विज्जु को, पुनि पुनि लेत बलाय ॥ १५ ॥

❊ दोहा ❊

मीन कुंड रसमय लसै, तामें मीन कलोल।
मीन खिलारी मीन कौ, खेलावत रस लोल ॥ १ ॥
कुंजाधिष्ठा मीन को, निज कुंडहि झकझोर।
बाहिर निकसन देत नहिं, भीतर ही रस चोर ॥ २ ॥
श्याम सुमणि युत प्रभा युत, मीन मूल झलकाहि।
बहिर बहिर सो रहत हैं, भीतर कूं नहिं जाहि ॥ ३ ॥

मीन पुष्ट निज वपुष से, रगड़त युगल करार।
निकसत पैठत बार बहु, बरसत मुख रस धार ॥ ४ ॥
कबहुँ लाल मुख श्याम मुख, सुभग मीन दरसाहि।
हौं पूछौं तोहि हे सखी, कब कब अस अस आहि ॥ ५ ॥
कुंडजात मुख लाल है, आवत है मुख श्याम।
ऐसे जानहु हे सखी, रस विशारदा वाम ॥ ६ ॥
संघर्षण यक एक से, अतिशय होत रसाल।
मगन होत आनन्द ह्वै, खेलवारी बहु काल ॥ ७ ॥
वहि सुख से उत्थान ह्वै, पुनि दोउ खेल पसारि।
हार जीत दोउ परसपर, निज निज दाव सँवार ॥ ८ ॥
अध ऊरध दोउ परसपर, मत्स्य कुंड करिवाल।
खेल खेलावत दुहुँन को, खिलवारी रसपाल ॥ ९ ॥
बिनु देखे यक एक के, दुहुँन रहे मुरझाय।
कुंड मीन युग प्रेम को, मो पै वरनि न जाय ॥१०॥
देखत ही यक एक के, दोऊ खिलि खिलि जाहि।
एकहि एक सुमिलन हित, वेग जोश मन मांहि ॥११॥
कोमल सूक्ष्म ह्रस्व अति, मीन प्रथम दरसाहि।
बाकी चरचा श्रवन सुनि, पुष्ट कठिन दिरघाहि ॥१२॥
स्वाभाविक तिहि मीन को, करज द्वन्द परमान।
देखत ही सुख सिन्धु को, करज वेद मिति जान ॥१३॥

कठिन पुष्ट अरु दीर्घ युत, रसमय दोउ दिखाहि।
सम्बन्धी रस कूप को, युग सुन्दर फल आहि ॥१४॥
शेष आइ फन रोपि कै, जस जस पूजत ताहि।
तस तसहीं उधकन लगै, कूप मिलन को चाहि ॥१५॥
खिलवारी तिहि मीन को, झट छोड़ै तत्काल।
मीन शीघ्र अति वेग सों, कुंड प्रविश रस जाल ॥१६॥
रस मतवारे दोउ अहैं, नहि तन वसन सँभार।
बिनु दुकूल झलकत अहै, अँग अँग छवि रतिमार॥१७॥
मत्स्य कुंड दोऊन की, शोभा अपरम्पार।
कोटि चन्द्र सूरज प्रभा, तिन ऊपर सखि वार ॥१८॥
धिक ताको बहुवार सखि, जो यहि रँग न रँगाहिं।
वाको ब्रह्मा जन्म दै, ठगि लीन्हों जग माहिं ॥१९॥

*　　*　　*　　*

युगल रंभ ऊरध सुमुख, ता बिच निम्न हिंडोल।
मदन मकर तेहि मध्य में, झूलत करत कलोल ॥ १ ॥
सुधा कूप प्रतीर पर, दीप टेम सुचि सोह।
दोउ दिशि सुभग करार हैं, दोउ मुख मिलि दरसोह॥२॥
जब चाहे तब विलग कर, कूपाधिष्ठा प्यारि।
तब सूरज सत सहस सम, प्रभा छाइ दिशि चारि॥ ३ ॥
वाको देखत मीन यक, सुन्दर काम करोर।
वेगि कूदि वहि कूप में, कूपहि दियो हिलोर॥ ४ ॥

कूप स्वामिनी मीन को, स्वामी मिलि दुहुँ ओर।
कूप मीन के खेल से, पावत सुख रस बोर॥ ५॥

* दोहा *

बिनु दुकूल बैठे जुगल, पिय प्यारी भरि अंक।
सो छवि निरखहि सखिन सब, जनु धन लूटहि रंक॥ १॥
एक हस्त वक्षोज पै, दूसर चिबुक मँझार।
अधर पान करि मत्त पिय, घूमत दृग रतनार॥ २॥

श्रीसियारामदासी के पत्र में वसंत विहार

* दोहा *

नित वसंत खेला करैं, पिय प्यारी रस रात।
हौं नैनन देखा करौं, यहै चाह दिन रात॥ १॥
लाल लाड़िली उमगि द्वौ, खेलत रंग वसंत।
पिचका सखियन सब लिये, रँग भरि मारत कंत॥ २॥

* सोरठा *

नूपुर शब्द रसाल, कुंज कुंज प्रति भरि रही।
हो हो होरी बाल, यूथन यूथ उचारहीं॥ ३॥
कौन कहे रँग रारि, जुटे दोउ दल प्रबल तर।
एकन एक प्रचारि, गारी गावत रस भरी॥ ४॥
दौरि गई पिय गोल, चन्द्रकला रस आगरी।
पिय के श्याम कपोल, मसलि रोरि चुम्बन करी॥ ५॥

दौरि पिय तत्काल, चन्द्रकला को पकरि लय।
मले उरोज रसाल, सात्विक छाये अंग में॥ ६ ॥
मारी पिचका प्यारि, उत्तमांग रस अंग में।
खिल उठ अंगुल चारि, झीने वस्त्रन में लसे॥ ७ ॥
श्याम मीन सुठिकारि, जाल बीच जनु उरझि रह।
अद्भुत शोभा प्यारि, मनु झाँकी करतहिं रहौं॥ ८ ॥
तब प्रीतम जू दौरि, प्यारी गोद उठाय कै।
झपटि गये तिहि ठौरि, मैन कुंज रचना अधिक॥ ९ ॥
सेज मैन रस भोउ, तापर दोउ विराजि कै।
भिरे परस्पर दोउ, दरसावत अनुपम कला॥१०॥
सखि सब चहुँदिशि राज, अनुपम झाँकी झाँकहीं।
बढ्यो अधिक रसराज, सखियन जै जै करि रही॥११॥
दोहा—यह झाँकी झाँका करो, प्रेमलता सुख रूप।
तन छूटे पर सीयपिय, पैहौ सुख अनुरूप॥१२॥

❀ श्री सोहागलता जी को पत्र ❀

❀ दोहा ❀

संपाघन के मध्य में, पंकज विहँसत सोह।
बालहंस सतकोटि सम, दुति दर्शक मन मोह॥ १ ॥
ता मधि आवत जात है, श्याम मकर रमनीय।
तिहि पटतर नहि पावहीं, कोटि काम कमनीय॥ २ ॥

दोउन के संयोग में, संपा घन सुप्रवीन।
करत सुकला अनेक विधि, महा मधुर रस भीन ॥ ३ ॥
घन विद्युत सनमुख दोऊ, बैठे अति सुख साज।
युगल श्याम रंभा उपरि, पीत रंभ युग राज ॥ ४ ॥
सिंह सिंह दोऊ मिले, चन्द चन्द मिलि सोह।
विम्ब विम्ब रस पान करि, मत्त परस्पर जोह ॥ ५ ॥
युगल नाल युग कमल को, पँखुरि पँखुरि मिलाय।
एक एक के सिंह को, बाँधेउ अति सचु पाय ॥ ६ ॥
निज निज बल अरु दावकरि, जुटत हटत अति सोह।
संपा विल्व प्रहार करि, घन को कियो विमोह ॥ ७ ॥
निज सर से संपा नहीं, झख को निकसन देत।
घन करि जतन अनेक विधि, तब निसरत रस लेत ॥८॥
कबहूँ संपा के उपरि, घन राजत सुठि सोह।
कबहूँ घन पर राजहीं, संपा सुख संदोह ॥ ९ ॥
ऊपरि चमकत नागिनी, तल मधि नग शिववाल।
रपटत अति वरजोर से, घन को कियो विहाल ॥१०॥
छीर फेन के मध्य में, रंभ युगल मधि लोल।
मीन श्याम मुख ऊर्धकरि, सरमें करत कलोल ॥११॥
छीर सिन्धु के मध्य में, संपा घन मिलि दोउ।
करत कलोल अनेक विधि, को कवि वरनि सकोउ ॥१२॥
चहुँदिशि हंसावलि लसै, देखत युगल विहार।
काहू को सुधि बुधि नहीं, रहे अपनपौ हार ॥१३॥

यह 'रसमोद' प्रवाह में, मज्जन करु दिन रात।
सुहागलता यहि सम नहीं, यावत सुख दरसात ॥१४॥

* श्रीसोहागलता जू को पत्र *

सोरठा–दिन दिन बढ़ु अनुराग, पिय प्यारी के चरन में।
उन बिच अति सुठि राग, श्रीसर्वेश्वरि पद कमल॥१॥
जिनकी कृपा सुपाय, दम्पति केलि सु अगम अति।
नइ नइ हिय दरसाय, ब्रह्मादिक जेहि तरसहीं ॥२॥

* दोहा *

कबहुँ महल परयंक पर, बिनु दुकूल झलकात।
अंग अंग प्रति निरखि के, रति पति कोटि लजात ॥ ३ ॥
कबहूँ घन पर दामिनी, दामिनि पर घन सोह।
सोहागलते यह छवि छटा, अति अद्भुत हिय जोह ॥ ४ ॥
हेमलता के हृदय में, श्रीफल युगल रसाल।
तिनको सर मुख शेष यक, चूसत होत निहाल ॥ ५ ॥
लपटि झपटि झकझोरहीं, मत गयन्द युग वाल।
एक एक में चिपकि कै, रसवस होत निहाल ॥ ६ ॥
निज निज सुधि बुधि बिसरिगे, को हम किनकी कौन।
रसानन्द सुख सिन्धु में, मगन युगल मुख मौन ॥ ७ ॥
होन लगी विपरीत पुनि, रस के ठेलमठेल।
सो सुख वरनन को करै, मन बुधि तहँ नहि हेल ॥ ८ ॥

सर = पाँच।

प्यारी कहि कहि पीय को, सीय बढ़ावहिं प्रेम।
प्रीतम कहि कहि सीय को पिय दरसावहि प्रेम ॥ ९ ॥

*** मंजु छन्द ***

मेरु शिखर के ऊपर सोहैं बैठे शिव धरि ध्याना।
शंकर भूषण तापर सोहत शिर एक सर मुख ताना ॥
उन पर बुध पितु बालक राजत प्रभा इन्दु बहुताना।
कनक शिखर को दावि दावि कै रस पीवत मस्ताना ॥ १० ॥

*** दोहा ***

श्रीसर्वेश्वरि कृपा तें, सखि यह रस दरसाहि।
नाहिं तो अतिहि अगम है, पद पद ठोकर खाहि ॥ ११ ॥
ब्रह्मादिक को गम नहीं, तहँ किमि लघु जिव जाहिं।
श्रीसर्वेश्वरि कृपा ते, पान करत न अघाहि ॥ १२ ॥

सोरठा—करि अपनो मन मीन, यहि रसनिधि में डूबहूँ।
सोहागलता तन तीन अनायास छुटि जाहिंगे ॥ १३ ॥

* शुभ उपदेश *

दोहा—कनक भवन पर्यंक पर, राजत युगल किशोर।
तहँ बैठे निरखा करौ, युगल केलि घनघोर ॥ १ ॥
कनक भवन परयंक पर, बैठे दै गलबाहिं।
अधरामृत रस पान करि, मत्त होय बरराहि ॥ २ ॥

शंकरभूषण = नाग, यहाँ प्रियकर। सरमुख = पंचमुख, पाँच ऊँगलियाँ युक्त हस्त।

पिय कह तिय को हे पिया, तिय कह पियहि पियारि।
बढ्यो अधिक विपरीत रस, निरखि मगन सब नारि ॥ ३ ॥
कनक महल परयंक पर, तरुन तमाल सुमाहिं।
कनकलता लिपटी सखी, शोभा कहि न सिराहिं ॥ ४ ॥
घन पै सोहै दामिनी, दामिन पै घन सोह।
रस बरसावत दोउ मिलि, निरखि निरखि सखि मोह। ५ ॥
रंभ युगल के मध्य में, सुन्दर पड़यो हिंडोल।
मदन मकर तिहि मध्य में, बहुविधि करत कलोल ॥ ६ ॥
पीत रंभ युग मध्य में, सुन्दर सरि यक सोह।
तामें कुंड अनूप यक, दरसक के मन मोह। ७ ॥
तापर नील सुरंभ युग, तिहि विच मदन सुमीन।
अति आतुर ह्वै कुंड में, कूदि परयो रस भीन ॥ ८ ॥
दीरघ कठिन सुपुष्ट सो, कुंडहि दियो हिलोर।
निकसत पैठत छनहि छन, सुख बरसत घनघोर ॥ ६ ॥
रसमोदलता प्रीतम प्रिया, रसवस भेलमभेल।
निशि दिन सेज विहार में, परयो रहत रस केलि ॥ १० ॥

* सोरठा *

प्रीतम सँग सिय वाल, रस पलंग लचकत जहाँ।
हे रसकेलि सुआलि, तहँ की करहुँ खवासिनी ॥ ११ ॥

* दोहा *

कनक भवन के कुंज में, पड़े रहो दिन रैन।
रसिकन जूठन पाइ कै, निरखहु सिय पिय नैन ॥ १ ॥

नख शिख युगल स्वरूप छवि, निरखहु भरि भरि नैन।
मोद पाइ पाले रहौ, जानि सबै सुख गैन ॥ २ ॥
कबहुँक विपिन प्रमोद में, सरयू पुलिन सु माँहि।
सखिन संग प्यारी पिश्रा, निरखु दिये गलबाँहि ॥ ३ ॥
कबहुँक छत्र फिरावहूँ, पान देहु मुख माहि।
अतर सुघ्रान कराइकै, सुख पावहुँ मन चाहि ॥ ४ ॥
कनक भवन के मध्य में, बिछी सेज अनमोल।
तापर लाड़िलि लाल दोउ, विलसत केलि अतोल ॥ ५ ॥
पिय बोले सुनु प्रानिनी, तो सम मम कोउ नाहिं।
खोजी पै पाई नहीं, सब ब्रह्मांडन माहिं ॥ ६ ॥
प्यारी कह सुनु लाड़िले, सत्य कहौं तोहि पाहि।
जहँ नहि तू तहँ मैं नहीं, अस जानहुँ मन माहि ॥ ७ ॥
रस बतियाँ यहि विधि करत, बढ़यो अनंग तरंग।
लपटि झपटि दोउ भिरि गये, बिनु परदा सब अंग ॥ ८ ॥
रस सुख सिन्धु अथाह में, करि करिणी दोउ संग।
निधरक विहरत मगन ह्वै, तस दोउ भरे अनंग ॥ ९ ॥
मन वानी से पार यह, युगल विहार अनंग।
कृपा करै सिय लाड़िली, तबै सुलभ यह रंग ॥ १० ॥
सखिन झरोखन में लगी, लखि लखि युगल विहार।
को हम कौन रु कहाँ की, काहू सुधि न सम्हार ॥ ११ ॥
यहि समाज में रहि अली, सुख लहु अपरम्पार।
अन्त समय में पाइही, चिन्मय युगल विहार ॥ १२ ॥

❋ इति श्रीरसमोद माधुरी उत्तरार्द्ध समाप्त ❋

(श्रीरसमोद साहित्य के प्रकाशन)

१—श्री रसमोद लताष्टक मूल ।

२—श्री रसमोद लताष्टक सटीक ।

३—श्री रसमोद चरितामृत ।

४—श्री रसमोद लीलामृत (श्रीप्रिया प्रीतम रसमोद माला सहित) ।

५—श्री मालिनी लीला ।

६—श्री महारास ।

७—श्री मान-लीला ।

८—श्री तत्सुख सुखित्व प्रकाशिनी लीला ।

९—श्री रसमोद माधुरी ।

भविष्य में सम्भाव्य प्रकाशन-

१—श्री रसमोद वचनामृत ।

२—श्री द्वादश वाटिका विलास ।

३—श्री रसमोद सिद्धान्त ।

४—श्री रसमोद जयन्ती कथा ।

५—श्री रसमोद जयन्ती पदावली ।

प्राप्ति स्थानः—

श्रीनृपनन्दनशरणजी

श्रीहनुमत निवास, श्रीकोठे पर, श्रीअयोध्याजी ।